بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक

बद्र

क़ादियान

Weekly Badar Qadian

HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰہَ وَلۡتَنۡظُرۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰہَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ خَبِیۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۔ وَلَا تَکُوۡنُوۡا کَالَّذِیۡنَ نَسُوا اللّٰہَ فَاَنۡسٰہُمۡ اَنۡفُسَہُمۡ ؕ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ۔

(سورۃ الحشر :19-20)

अनुवाद: ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह का तक़्वा अपनाओ, और हर व्यक्ति यह देखे कि वह कल (आख़िरत) के लिए क्या आगे भेज रहा है। और अल्लाह का तक़्वा अपनाओ। निश्चय ही अल्लाह उन सभी कामों से हमेशा पूरी तरह ख़बर रखता है जो तुम करते हो। और उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें स्वयं अपने ही बारे में गाफ़िल कर दिया। यही लोग बदचलन हैं, यही अवज्ञाकारी (फ़ासिक) लोग हैं।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक -32 | 22 सफ़र 1448 हिज्री कमरी, 06 ज़हूर 1405 हिज्री शम्सी, 06 अगस्त 2026 ई.

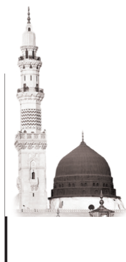

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

किसी व्यक्ति के बुरे होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को तुच्छ समझे

عَنۡ أَبِي هُرَيۡرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ: "لَا تَحَاسَدُوا، وَلَا تَنَاجَشُوا، وَلَا تَبَاغَضُوا، وَلَا تَدَابَرُوا، وَلَا يَبِعۡ بَعۡضُكُمۡ عَلَى بَيۡعِ بَعۡضٍ، وَكُونُوا عِبَادَ اللّٰهِ إِخۡوَانًا الۡمُسۡلِمُ أَخُو الۡمُسۡلِمِ لَا يَظۡلِمُهُ، وَلَا يَخۡذُلُهُ، وَلَا يَحۡقِرُهُ التَّقۡوَى هَاهُنَا، وَيُشِيرُ إِلَى صَدۡرِهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، بِحَسۡبِ امۡرِءٍ مِنَ الشَّرِّ أَنۡ يَحۡقِرَ أَخَاهُ الۡمُسۡلِمَ كُلُّ الۡمُسۡلِمِ عَلَى الۡمُسۡلِمِ، حَرَامٌ دَمُهُ، وَمَالُهُ، وَعِرۡضُهُ".

(सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे वस्सिला वल आदाब, बाब: मुसलमान पर ज़ुल्म करने और उसे बेसहारा छोड़ने की मनाही..., हदीस: 6541)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "आपस में ईर्ष्या (हसद) न करो। आपस में झगड़ा न करो। एक-दूसरे के प्रति दिल में बैर न रखो और न ही आपस में दुश्मनी रखो। तुममें से कोई किसी दूसरे के सौदे पर अपना सौदा न करे। ऐ अल्लाह के बंदो! आपस में भाई-भाई बन जाओ। मुसलमान, मुसलमान का भाई है। वह उस पर ज़ुल्म नहीं करता, उसे बेबस नहीं छोड़ता, उसे अपमानित नहीं करता और न ही उसे तुच्छ समझता है।" फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार अपने सीने की ओर इशारा करके फ़रमाया:"तक़्वा यहाँ है, तक़्वा यहाँ है, तक़्वा यहाँ है।"किसी व्यक्ति के बुरे होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को तुच्छ समझे। हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का खून, माल और सम्मान (इज़्ज़त) हराम है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

मनुष्य दुनिया की इच्छाओं और सुखों को ही जन्नत समझता है, जबकि वास्तव में वह दोज़ख है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "इस्लाम में सच्चा जीवन एक ऐसी मृत्यु चाहता है जो कड़वी होती है। लेकिन जो व्यक्ति उसे स्वीकार कर लेता है, अंत में वही वास्तव में जीवित होता है। हदीस में आया है कि मनुष्य दुनिया की इच्छाओं और सुखों को ही जन्नत समझता है, जबकि वास्तव में वह दोज़ख है। और सौभाग्यशाली व्यक्ति अल्लाह की राह में आने वाली तकलीफ़ों को स्वीकार करता है, और वही वास्तव में जन्नत होती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह दुनिया नश्वर है और सभी लोग मरने के लिए ही पैदा हुए हैं। आखिर एक समय ऐसा आता है जब सभी मित्र, परिचित, प्रियजन और रिश्तेदार बिछड़ जाते हैं। उस समय जिन अनुचित खुशियों और सुखों को इंसान आराम समझता था, वे कड़वाहट के रूप में सामने आ जाते हैं। सच्ची खुशहाली और सच्चा सुकून तक़्वा (धर्मपरायणता) के बिना प्राप्त नहीं हो सकते। और तक़्वा पर दृढ़ रहना मानो ज़हर का प्याला पीना है। लेकिन जो व्यक्ति तक़्वा अपनाता है, उसके लिए अल्लाह तआला हर प्रकार के आराम और सुख के साधन उपलब्ध कर देता है। 'और जो अल्लाह का तक़्वा अपनाता है, अल्लाह उसके लिए निकलने का रास्ता बना देता है और उसे वहाँ से रोज़ी देता है जहाँ से उसे गुमान भी नहीं होता।(सूरह अत-तलाक़, आयत 3–4)

इसलिए सच्ची खुशहाली का मूल सिद्धांत तक़्वा है। लेकिन तक़्वा प्राप्त करने के लिए यह उचित नहीं कि हम तरह-तरह की शर्तें लगाते फिरें। तक़्वा अपनाने के बाद जो भी माँगोगे, वह मिलेगा। अल्लाह तआला अत्यंत दयालु और कृपालु है। तक़्वा अपनाओ, फिर जो चाहोगे वह तुम्हें देगा।" (मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 90, संस्करण 2003, प्रकाशित रब्वा)

तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना के लिए रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा

تَتَّقُوۡنَ का एक अर्थ यह भी है कि यदि तुम पूरे निष्कपट भाव और दृढ़ विश्वास के साथ अपने रब की इबादत करोगे, तो आपस के अत्याचारों से भी बच जाओगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-बक़रह की आयत संख्या 22 की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं:

تَتَّقُوۡنَ में जहाँ उन बातों से बचने का अर्थ निकलता है जो अल्लाह तआला और उसके बंदे के बीच के संबंध को बिगाड़ देती हैं, वहीं इससे उन बातों से बचने का भी संकेत मिलता है जो इंसानों के आपसी संबंधों से जुड़ी होती हैं। अल्लाह की इबादत मनुष्य को ऐसी बातों में गलती करने से भी बचाती है।

जो व्यक्ति अल्लाह तआला को अपना रब मानने लगता है, उसके लिए यह आवश्यक है कि वह उसके बंदों के साथ भी अच्छा व्यवहार करे। और यह भी ज़रूरी है कि वह लोगों पर अत्याचार न करे, क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं को अल्लाह तआला का बंदा बना लेता है, उसकी नज़र अपनी सभी ज़रूरतों के लिए केवल अल्लाह तआला पर रहती है, विशेष रूप से जब वह उसके रब होने पर ईमान रखता हो।

और जो व्यक्ति अल्लाह तआला को अपनी सभी ज़रूरतों का ज़िम्मेदार और पूरा करने वाला समझता है, वह लोगों के धन पर बुरी नज़र नहीं रख सकता। न ही अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए उनके माल में बेईमानी कर सकता है और न उन पर अत्याचार कर सकता है।

इसलिए تَتَّقُوۡنَका एक अर्थ यह भी है कि यदि तुम पूरे निष्कपट भाव और दृढ़ विश्वास के साथ अपने रब की इबादत करोगे, तो आपस के अत्याचारों से भी बच जाओगे और दुनिया में भी शांति स्थापित होगी।

सहाबा-ए-किराम अपने रब के सच्चे बंदे बन गए थे। देखो, उनके शासन में दुनिया को कितना अधिक अमन और शांति मिली। यहाँ तक कि उनके दुश्मनों ने भी उनके अच्छे व्यवहार की प्रशंसा की। और आज तक हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के शासन की याद लोगों के दिलों में ताज़ा है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का शासन भी ऐसा ही था, लेकिन चूँकि उनके बारे में मतभेद पाया जाता है, इसलिए मैंने उनका उल्लेख नहीं किया।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 1, पृष्ठ 302, ऑनलाइन संस्करण)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के लंदन जलसा सालाना 2019 के उद्घाटन भाषण का सार

जीवन का वास्तविक उद्देश्य तक़्वा प्राप्त करना है

जिस प्रकार रात और दिन एक साथ नहीं हो सकते, उसी प्रकार ईमान और गुनाह भी एक साथ नहीं रह सकते।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 2 अगस्त 2019 दिन शुक्रवार को जमाअत अहमदिया यूके के जलसा सालाना के उद्घाटन सत्र में अत्यंत ज्ञानवर्धक भाषण दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लिवा-ए-अहमदियत (अहमदियत का ध्वज) फहराने के बाद दुआ कराई और शाम 4 बजकर 37 मिनट पर जलसा-स्थल में पधारकर अध्यक्षीय आसन ग्रहण किया। इसके बाद कार्यक्रम का विधिवत आरंभ हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र क़ुरआन करीम के पाठ से हुई, जिसे मकर्रम राशिद ख़त्ताब साहब (कबाबीर) ने प्रस्तुत किया। आपने सूरह आले-इमरान की आयत 191 से 196 तक तिलावत की। इसके बाद इन आयतों का उर्दू अनुवाद मौलाना नसीर अहमद क़मर साहब (एडिशनल वकील-उल-इशाअत, लंदन) ने पढ़कर सुनाया।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के फ़ारसी काव्य में से कुछ अशआर मकर्रम सैयद आशिक़ हुसैन साहब ने तथा हुज़ूर के उर्दू काव्य में से कुछ अशआर मकर्रम मुसव्विर अहमद साहब (ऑस्ट्रिया) ने मधुर स्वर में प्रस्तुत किए।

शाम 5 बजकर 4 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मंच पर पधारे और जलसा में उपस्थित लोगों तथा एमटीए के माध्यम से पूरी दुनिया के श्रोताओं और दर्शकों को "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू" कहा तथा उद्घाटन भाषण आरंभ किया।

तशह्हुद, तअव्वुज़ और सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने सूरह आले-इमरान की आयत 194 की तिलावत की और उसका अनुवाद पढ़ा।

इसके बाद हुज़ूर ने फ़रमाया कि आज हमारा यहाँ एकत्र होना इसलिए है कि हम इस बात का ऐलान और इज़्हार करें कि अल्लाह तआला ने अपने विशेष अनुग्रह से हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की। उन्होंने हमें अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करने की ओर ध्यान दिलाया और स्पष्ट रूप से बताया कि केवल अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करने से ही हमारी दुनिया और आख़िरत सँवर सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने सूरह आले-इमरान की आयत 194 के संदर्भ में फ़रमाया कि यदि हमारे कर्म इस शिक्षा के अनुसार नहीं होंगे, तो हमारे ईमान लाने का दावा बिल्कुल खोखला होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि हमें अपना आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है और सच्चा ईमान पैदा करने के लिए अल्लाह तआला के आदेशों को खोजने की आवश्यकता है कि क्या हमने अपने भीतर वे गुण पैदा कर लिए हैं जो एक सच्चे मोमिन के लिए आवश्यक हैं? वे कौन-से मानदंड हैं जिन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने रखा है?

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों के प्रकाश में ईमान की वास्तविकता स्पष्ट की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों का उल्लेख करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि यदि अल्लाह तआला के अस्तित्व पर सच्चा ईमान हो, तो मनुष्य गुनाह की ओर जा ही नहीं सकता। इसी प्रकार आपने फ़रमाया कि मनुष्य के जीवन का वास्तविक उद्देश्य तक़्वा प्राप्त करना है, जिसके बिना गुनाहों से बचना संभव ही नहीं।

हुज़ूर अनवर ने गुनाह के बारे में फ़रमाया कि मनुष्य गुनाह की ओर तभी जाता है जब वह अपने आपको अकेला समझता है। और यह विचार कि मनुष्य अकेला है, नास्तिक विचार है।

तक़्वा के महत्व पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने विस्तार से प्रकाश डाला और फ़रमाया कि क़ुरआन की शुरुआत ही इसी विषय से होती है। दूसरी सूरह के आरंभ में "हुदल्लिल मुत्तक़ीन" (यह तक़्वा वालों के लिए मार्गदर्शन है) के शब्द आते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि जब मनुष्य के भीतर तक़्वा होता है, तो वह गुनाह के सभी रास्तों को समाप्त कर देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि तक़्वा से बढ़कर कोई सफलता नहीं है। इस युग में तक़्वा की अत्यधिक आवश्यकता है। अल्लाह तआला के भेजे हुए लोग दुनिया में इसी उद्देश्य से आते हैं कि तक़्वा को स्थापित करें, और इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप से इसके प्राप्त करने की ओर ध्यान दिलाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने मुत्तक़ी (धर्मपरायण व्यक्ति) के बारे में फ़रमाया कि केवल मुत्तक़ी को ही मुक्ति मिलती है और उसे वहाँ से रोज़ी मिलती है जहाँ से उसे कल्पना भी नहीं होती। इसी प्रकार एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला स्वयं मुत्तक़ी का संरक्षक बन जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने नमाज़ की पाबंदी के बारे में फ़रमाया कि नमाज़ प्रत्येक मुसलमान पर दिन में पाँच बार फ़र्ज़ है और इससे अल्लाह तआला का प्रेम तथा उसकी महानता मनुष्य के हृदय में बढ़ती है।

हुज़ूर अनवर ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि सच्चा ईमान यह है कि मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताएँ केवल अल्लाह तआला के सामने ही प्रस्तुत करे। आपने ईमान का एक सुंदर उदाहरण भी बताया, जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान किया है कि जिस प्रकार रात और दिन एक साथ नहीं हो सकते, उसी प्रकार ईमान और गुनाह भी एक साथ नहीं रह सकते।

इस भाषण में हुज़ूर अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथनों के प्रकाश में बैअत की वास्तविकता स्पष्ट करते हुए फ़रमाया कि केवल बैअत कर लेने पर भरोसा नहीं करना चाहिए। जब तक जीवन का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त नहीं होता, मुक्ति नहीं मिल सकती। यदि कोई व्यक्ति स्वयं अमल करने वाला न हो, तो बैअत का कोई लाभ नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने नेक कर्मों और इस्तिग़फ़ार (अल्लाह से क्षमा माँगने) के संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अत्यंत ज्ञानवर्धक उद्धरण पढ़कर सुनाए।

जमाअत के सदस्यों को क़ुरआन करीम का महत्व बताते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि क़ुरआन करीम को केवल कहानी की पुस्तक की तरह नहीं पढ़ना चाहिए, बल्कि क़ुरआन एक नूर है, एक जीवित और प्रकाशमान पुस्तक है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रभावशाली शब्दों में जमाअत अहमदिया की महानता का उल्लेख किया और इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि जमाअत में शामिल होने वाले लोगों का जीवन सामान्य दुनियादार लोगों जैसा नहीं होना चाहिए। केवल यह कह देना कि हम सिलसिले में शामिल हैं, लेकिन अमल की आवश्यकता नहीं, यह निकम्मी अवस्था है और अल्लाह तआला इसे पसंद नहीं करता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत के लोगों को जो नसीहतें कीं, उनमें से कुछ का उल्लेख हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने किया। आपने फ़रमाया—

यदि तुम मेरा संबंध मानते हो, तो मेरे उद्देश्यों और मक़सदों को पूरा करो। अपने आचरण से सिद्ध करो कि सत्य के अनुयायियों का समूह तुम ही हो। ऐसे मनुष्य बन जाओ जो नया जीवन जीते हों।

भाषण के अंत में हुज़ूर अनवर ने पूरी दुनिया और उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए दुआ करने की प्रेरणा देते हुए फ़रमाया कि इन दिनों विशेष रूप से दुनिया और उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए दुआ करें कि दुनिया जिस युद्ध की ओर बढ़ रही है, अल्लाह तआला उसे उससे बचाए। और हम ऐसे लोग बनें जो पूरी दुनिया में इस्लाम का झंडा बुलंद करने वाले हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का यह भाषण शाम 6 बजकर 12 मिनट पर समाप्त हुआ, जिसके बाद सामूहिक दुआ के साथ यह सत्र समाप्त हो गया।

अल्लाह तआला हम सभी को हुज़ूर अनवर के इन निर्देशों को सुनने, समझने और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

(साभार: अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 19 जून 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ.
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता और दानशीलता के संबंध में अब मैं कुछ रिवायतें प्रस्तुत करता हूँ।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि. से रिवायत है कि अंसार में से कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ माँगा। आपने उन्हें दे दिया। फिर उन्होंने आपसे माँगा और आपने उन्हें दे दिया। फिर उन्होंने आपसे माँगा और आपने उन्हें दे दिया। यहाँ तक कि आपके पास जो कुछ था, सब समाप्त हो गया। तब आपने फ़रमाया:

"मेरे पास जो भी माल होगा, मैं उसे तुमसे हरगिज़ नहीं छिपाऊँगा। और जो व्यक्ति लोगों से माँगने से बचेगा, अल्लाह तआला भी उसे बचाएगा।"

साथ ही आपने किसी से माँगने से बचने की भी नसीहत फ़रमा दी।

फिर फ़रमाया: "जो व्यक्ति दुनिया के माल से बेनियाज़ रहना चाहेगा, अल्लाह तआला भी उसे बेनियाज़ कर देगा। और जो अपने ऊपर ज़ोर डालकर सब्र करेगा, अल्लाह तआला उसे भी सब्र देगा। और सब्र से बढ़कर किसी को कोई अधिक व्यापक और बेहतर नेमत नहीं दी गई।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुज़-ज़कात, बाब: अल-मसअला (माँगने) से बचना, हदीस 1469, जिल्द 3, पृष्ठ 110, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

कुछ कठिनाइयों, तकलीफ़ों और ज़रूरतों के समय सब्र करना भी आवश्यक होता है। अल्लाह तआला उसका इनाम देता है।

हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक सफ़र में थे। मैं एक तेज़ और कुछ हठी जवान ऊँट पर सवार था, जो मेरे पिता हज़रत उमर रज़ि. का था। वह ऊँट मुझे काबू में नहीं रहने देता था और लोगों से आगे निकल जाता था। हज़रत उमर रज़ि. उसे डाँटते थे। यानी ऊँट को रोकते, उसे आवाज़ देते और पीछे कर देते। शायद मारते होंगे या किसी तरह डराते होंगे। जो भी ऊँट को नियंत्रित करने का तरीका होता है, उसके अनुसार उसे रोकते और वह ऊँट पीछे हो जाता। लेकिन फिर वह लोगों की सवारियों से आगे निकल जाता। तब हज़रत उमर रज़ि. उसे फिर डाँटते और इस सम्मान में पीछे कर देते कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी से कोई सवारी या सवार आगे न निकल जाए। हज़रत उमर रज़ि. को यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि कोई सवारी, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी से आगे जाए।

जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह देखा तो हज़रत उमर रज़ि. से फ़रमाया, "यह ऊँट मुझे कीमत लेकर दे दीजिए।"

उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो आपका ही है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, इसे मुझे बेच दीजिए।"

इसलिए उन्होंने वह ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बेच दिया।

फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"अब्दुल्लाह बिन उमर! अब यह ऊँट तुम्हारा है। इससे जो चाहो करो।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुल-बुयूअ, बाब: यदि कोई वस्तु ख़रीदकर उसे हिबा (उपहार) कर दे..., हदीस संख्या 2115, जिल्द 4, पृष्ठ 86, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

उपहार देने का यह भी एक अनोखा तरीका था। आपने स्पष्ट कर दिया कि ऊँट तो एक जानवर है। यदि वह इस प्रकार आगे निकल जाता है तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अब यह ऊँट मेरी ओर से उपहार दिया गया है। यदि यह सवारियों में आगे निकल भी जाए तो यही कहा जाएगा कि यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उपहार में दिया हुआ ऊँट था, जो आगे निकल गया।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. बयान करते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक ग़ज़वा (युद्ध अभियान) में था। मेरा ऊँट धीमा हो गया और थक गया। उस समय नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास आए और फ़रमाया:

"जाबिर!"

मैंने अर्ज़ किया, "जी।" आपने फ़रमाया, "क्या बात है?"

मैंने कहा, "ऊँट चलने में बहुत धीमा हो गया है और थक गया है, इसलिए मैं पीछे रह गया हूँ।"

तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सवारी से उतरे और अपनी छड़ी (खूँटी) से ऊँट को चलाने लगे। फिर फ़रमाया:

"सवार हो जाओ।" मैं सवार हुआ तो मैंने देखा कि वह ऊँट इतना तेज़ हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी आगे निकलने लगा, इसलिए मुझे उसे रोकना पड़ा।

फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे पूछा:

"क्या तुम्हारा निकाह हो गया है?"

मैंने अर्ज़ किया, "जी हाँ।" इसके बाद आपने फ़रमाया:

"देखो, अब तुम अपने घर पहुँचने वाले हो। जब पहुँचो तो समझदारी और सावधानी से काम लेना। घर में अच्छा व्यवहार होना चाहिए।"

फिर आपने फ़रमाया: "क्या तुम यह ऊँट मुझे बेचोगे?"

मैंने कहा, "जी हाँ।" तब आपने उसे मुझसे एक औक़िया चाँदी के बदले खरीद लिया।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझसे पहले मदीना पहुँच गए और मैं अगली सुबह पहुँचा। हम मस्जिद आए तो मैंने आपको मस्जिद के दरवाज़े पर पाया। आपने फ़रमाया:

"अब पहुँचे हो?" मैंने कहा, "जी हाँ।"

आपने फ़रमाया: "अपना ऊँट छोड़ दो और मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ो।"

इसलिए मैं अंदर गया और नमाज़ पढ़ी। फिर आपने हज़रत बिलाल रज़ि. से फ़रमाया: "इन्हें एक औक़िया तौलकर चाँदी दे दो।"

हज़रत बिलाल रज़ि. ने तौलकर मुझे चाँदी दे दी और तौल में तराज़ू को थोड़ा झुका दिया, अर्थात थोड़ा अधिक दे दिया।

फिर मैं पीठ मोड़कर चल पड़ा। आपने फ़रमाया: "जाबिर को मेरे पास बुलाओ।"

मैंने मन ही मन सोचा कि अब शायद आप मेरा ऊँट मुझे वापस कर देंगे, और मुझे इससे अधिक कोई बात नापसंद नहीं थी कि आपने उसे खरीद लिया हो और फिर वापस कर दें। लेकिन आपने फ़रमाया:

"अपना ऊँट भी ले लो और उसकी कीमत भी तुम्हारी ही है।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुल-बुयूअ, बाब: जानवरों की खरीद-फ़रोख़्त..., रिवायत 2097, जिल्द 4, पृष्ठ 68–66, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि हज़रत जाबिर रज़ि. बयान करते हैं:

इसके बाद मैं एक यहूदी के पास से गुज़रा। जब मैंने उसे यह पूरा वाक़िआ सुनाया तो वह बहुत आश्चर्य से कहने लगा:

"क्या उन्होंने कीमत भी वापस कर दी और ऊँट भी तुम्हें दे दिया?"

मैंने कहा: "हाँ, बिल्कुल ऐसा ही हुआ।"

वह कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से दिए गए इस उपहार में इतनी बरकत हुई कि वह ऊँट नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने, हज़रत अबू बक्र रज़ि. के दौर और हज़रत उमर रज़ि. के समय तक जीवित रहा।

(नजाहुल-क़ारी, शरह सहीह अल-बुख़ारी, जिल्द 16, पृष्ठ 22; नजाहुल-क़ारी, शरह सहीह अल-बुख़ारी, जिल्द 16, पृष्ठ 35–34, मकतबा दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श, आपकी शिक्षा और आपकी पवित्र

आत्मिक शक्ति का प्रभाव सभी सहाबा रज़ि. पर था। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा पर भी यही प्रभाव था। इसी कारण उन्होंने बिना किसी तंगी या कमी के डर के अपना सारा माल आपके सुपुर्द कर दिया।

इसलिए बयान किया जाता है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ख़दीजा रज़ि. के पास आए और आप कुछ चिंतित थे। हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने पूछा: "क्या बात है?" आपने फ़रमाया:

"अकाल का समय है। मुझे तुमसे शर्म आती है कि यदि मैं तुम्हारा माल खर्च करूँ तो तुम्हारा धन समाप्त हो जाएगा। और यदि मैं उसे खर्च न करूँ तो मुझे अल्लाह से डर लगता है।"

तब हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने क़ुरैश के लोगों को बुलाया, जिनमें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि. भी थे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि. बयान करते हैं कि हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने दीनार निकालकर उनका इतना बड़ा ढेर लगा दिया कि माल की अधिकता के कारण मैं यह भी नहीं देख पा रहा था कि मेरे सामने कौन बैठा है।

फिर हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने कहा:

"तुम सब गवाह रहो कि यह सारा माल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है। यदि वे चाहें तो इसे खर्च कर दें और यदि चाहें तो अपने पास रख लें।"

इस प्रकार उन्होंने आपकी चिंता दूर करने के लिए अपना सारा धन आपके हवाले कर दिया और कहा कि आप निश्चिंत होकर इसे खर्च करें।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, इमाम राज़ी, जिल्द 16, जुज़ 32–31, पृष्ठ 198, तफ़्सीर सूरह अद-दुहा, आयत 8 के अंतर्गत, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2004 ई.)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि. से रिवायत है कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और आपसे कुछ माँगा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"इस समय मेरे पास कुछ नहीं है। तुम मेरी ओर से अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीद लो। जब मेरे पास कुछ आएगा, तो मैं उसका भुगतान कर दूँगा।"

इस पर हज़रत उमर रज़ि. ने अर्ज़ किया:

"ऐ अल्लाह के रसूल! आपने इसे पहले ही बहुत कुछ दे दिया है। और जो आपकी सामर्थ्य में नहीं है, उसका अल्लाह तआला ने आपको ज़िम्मेदार नहीं ठहराया।"

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत उमर रज़ि. की यह बात पसंद नहीं आई।

तब अंसार में से एक व्यक्ति ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप खर्च कीजिए और अर्श के मालिक अल्लाह की ओर से निर्धनता का डर न कीजिए।"

अंसारी की यह बात सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुरा दिए और आपके चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई देने लगी। फिर आपने फ़रमाया:

"मुझे इसी बात का आदेश दिया गया है।"

(शमाइलुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 149–148, बाब: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र का वर्णन, हदीस 340, नूर फ़ाउंडेशन, रब्वा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. कहा करते थे कि अहल-ए-सुफ़्फ़ा मुसलमानों के मेहमान होते थे। उनका कोई घर नहीं था जहाँ जाकर आराम करते और न ही कोई ऐसा व्यक्ति था जिसके पास जाकर वे रह सकें।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास सदक़ा आता तो आप उसे उन्हीं के पास भिजवा देते और उसमें से स्वयं कुछ भी नहीं लेते थे। वैसे भी आप सदक़ा नहीं लेते थे, क्योंकि वह आपके लिए हराम था। वह सदक़ा दूसरों, अर्थात गरीबों के लिए होता था।

लेकिन जब आपके पास कोई उपहार (हदिया) आता तो आप अहल-ए-सुफ़्फ़ा को बुलवा लेते। उस उपहार में से स्वयं भी कुछ लेते और उसमें से उन्हें भी देते।

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुर-रिक़ाक़, हदीस संख्या 6452, जिल्द 15, पृष्ठ 222, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

आपकी उदारता और दानशीलता के साथ-साथ आपकी हमदर्दी और शिक्षा-प्रशिक्षण का स्तर भी कितना ऊँचा था।

इस संबंध में एक रिवायत आती है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. बयान करते हैं कि एक बार एक बद्दू नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और अपनी किसी ज़रूरत के बारे में आपसे मदद माँगी।

रावी इक्रिमा कहते हैं कि मेरा विचार है कि वह किसी रक्त-मूल्य (दियत) के मामले में सहायता माँगने आया था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे कुछ दिया। फिर आपने फ़रमाया:

"क्या मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया है?" उस बद्दू ने कहा:

"नहीं, आपने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।"

कुछ मुसलमान क्रोधित होकर उसकी ओर बढ़े और उसे पकड़ने का इरादा किया, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इशारे से उन्हें रोक दिया।

फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठकर अपने घर चले गए और उस बद्दू को भी घर बुलाया। आपने उससे फ़रमाया:

"तुम हमारे पास आए, तुमने हमसे माँगा, हमने तुम्हें दिया, लेकिन तुमने वह बात कह दी जो तुमने कही। तुम्हें मालूम है, तुमने क्या कहा? तुमने कहा कि मैंने न्याय नहीं किया।"

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे घर से और अधिक दिया। फिर आपने फ़रमाया:

"अब बताओ, क्या मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया है?" बद्दू ने कहा:

"जी हाँ। अल्लाह तआला आपके घर वालों और आपके क़बीले वालों को सबसे उत्तम बदला दे।"

तब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया:

"तुम हमारे पास आए, तुमने हमसे माँगा, हमने तुम्हें दिया। लेकिन तुम्हारे मन में जो आया, तुमने बिना सोचे-समझे कह दिया। मेरे सहाबा रज़ि. के दिलों में तुम्हारी उस बात के कारण तुम्हारे प्रति कुछ नाराज़गी है। इसलिए अब जब तुम बाहर जाओ तो उनके सामने भी वही बात कह देना जो अभी तुमने मेरे सामने कही है, ताकि उनके दिलों की नाराज़गी दूर हो जाए।"

अर्थात अब उसने यह कहा था कि आपने न्याय किया है।

रावी कहते हैं कि जब वह बद्दू बाहर आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"तुम्हारा यह साथी हमारे पास आया था। इसने हमसे माँगा, हमने इसे दिया, लेकिन इसके मन में जो आया, यह कह बैठा। फिर हमने इसे बुलाया और इसे और भी दिया। अब इसका कहना है कि यह खुश हो गया है। क्या ऐसा ही है?"

उस बद्दू ने उत्तर दिया: "जी हाँ। और अल्लाह आपको, आपके घर वालों और आपके क़बीले वालों की ओर से उत्तम प्रतिफल दे।"

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. बयान करते हैं कि इसके बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"मेरी और इस बद्दू की मिसाल उस व्यक्ति जैसी है जिसकी ऊँटनी डरकर भाग जाए और लोग उसके पीछे दौड़ पड़ें, जिससे वह ऊँटनी और अधिक घबरा जाए। तब ऊँटनी का मालिक कहे कि मुझे और मेरी ऊँटनी को छोड़ दो, क्योंकि मैं उसके साथ अधिक नरमी से पेश आने वाला हूँ और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उसे कैसे पकड़ा जाता है। यदि तुम उसके पीछे दौड़ोगे तो वह और अधिक भागेगी।"

फिर ऊँटनी का मालिक उसकी ओर बढ़ा। वह उसके लिए कुछ घास लेकर आया और उसे अपनी ओर बुलाने लगा। हाथ में घास लेकर वह ऊँटनी के पास गया, यहाँ तक कि वह उसके पास आ गई। तब उसने उस पर काठी (कजावा) रखी और उस पर सवार हो गया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"ऊँटनी घास खाने के लिए स्वयं उसके पास आ जाती है। वह घास देखकर उसके पास आएगी और जब पास आ जाएगी तो वह उस पर काठी रख देगा।"

फिर आपने फ़रमाया: "यदि उस समय मैं तुम्हारी बात मान लेता, जब तुम लोगों ने कहा था कि इस बद्दू के साथ कठोरता की जाए, और मैं तुम्हें उसके साथ सख़्ती करने देता, जबकि उसने कठोर शब्द कहे थे, तो वह आग (जहन्नम) में चला जाता। लेकिन मैंने उसे बचा लिया और अब वह खुश भी हो गया है।"

(मजमउज़-ज़वाइद, जिल्द 8, पृष्ठ 414–413, किताब: अलामातुन्नुबुव्वह, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम चरित्र और लज्जाशीलता का वर्णन, हदीस संख्या 14193, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2001 ई.)

यह आपके देने का तरीका था। आप उसे अपने घर भी ले गए और घर से उसे दिया। बाहर भी दे सकते थे, लेकिन आपने यह दिखा दिया कि देखो, मेरे घर में भी ऐशो-आराम का कोई सामान नहीं है, फिर भी जो कुछ है, वही मैं तुम्हें दे रहा हूँ। इससे उस बद्दू को भी पूरी तसल्ली हो गई।

हज़रत रुबय्यि बिन्त मुअव्विज़ बिन अफ़रा रज़ि. बयान करती हैं कि मेरे पिता मुअव्विज़ बिन अफ़रा रज़ि. ने मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक साअ ताज़ी खजूरें भेजीं, जिनके ऊपर छोटी-छोटी ताज़ी ककड़ियाँ रखी हुई थीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ककड़ियाँ पसंद थीं।

उसी समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहरीन से कुछ आभूषण आए हुए थे। आपने उन आभूषणों में से एक मुट्ठी भरकर मुझे दे दिए।

दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी हथेली भर आभूषण या सोना मुझे दिया और फिर फ़रमाया:

"इसे पहन लो।"

(मजमउज़-ज़वाइद, किताब: अलामातुन्नुबुव्वह, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता, जिल्द 8, पृष्ठ 410, हदीस संख्या 14183–14182, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2001 ई.)

खजूरों और ककड़ियों के बदले आपने सोने के आभूषण दे दिए। यही है किसी उपहार का सबसे उत्तम ढंग से बदला देना।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास किसी ऐसे व्यक्ति का जनाज़ा लाया जाता जिस पर कर्ज़ होता, तो आप पूछते:

"क्या उसने अपना कर्ज़ चुकाने के लिए कुछ माल छोड़ा है?" यदि लोग कहते, "हाँ", तो आप उसकी नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाते।

और यदि लोग कहते कि उसने कुछ नहीं छोड़ा, तो आप मुसलमानों से फ़रमाते:

"तुम अपने साथी की नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ लो।"

फिर जब अल्लाह तआला ने आपको विजय और सम्पन्नता प्रदान की, तो आपने फ़रमाया:

"मैं मुसलमानों के लिए उनके रिश्तेदारों से भी अधिक निकट हूँ। इसलिए यदि मोमिनों में से कोई व्यक्ति मृत्यु के समय कर्ज़ छोड़ जाए, तो उसका भुगतान करना मेरी ज़िम्मेदारी है। और जो कोई माल छोड़ जाए, वह उसके वारिसों का होगा।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुल-कफ़ाला, बाब: कर्ज़, हदीस 2298, जिल्द 4, पृष्ठ 280, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

"यदि किसी पर कर्ज़ है तो उसे मैं अदा करूँगा। लेकिन यदि वह अपनी विरासत में माल छोड़ गया है, तो वह उसके वारिसों का होगा।"

अब्दुल्लाह हौज़नी बयान करते हैं कि मैं हज़रत बिलाल रज़ि., जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुअज़्ज़िन थे, से हलब (अलेप्पो) में मिला। मैंने कहा:

"ऐ बिलाल! मुझे बताइए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का खर्च किस प्रकार चलता था?"

उन्होंने कहा: "आपके पास स्वयं कुछ भी नहीं रहता था। आपकी ओर से सारा प्रबंध मैं ही किया करता था। जिस समय से अल्लाह तआला ने आपको नबी बनाकर भेजा और मैंने आपकी बैअत की, उसी समय से आपकी वफ़ात तक मैं ही यह व्यवस्था करता रहा।"

उन्होंने आगे कहा: "जब कोई मुसलमान आपके पास आता और आप देखते कि उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं, तो आप मुझे आदेश देते। मैं जाकर उधार लेता, उसके लिए एक चादर खरीदता, उसे पहनाता और उसे खाना भी खिलाता।"

फिर उन्होंने कहा:

"एक दिन मुशरिकों में से एक व्यक्ति मुझसे मिला। उसने कहा, 'ऐ बिलाल! मेरे पास बहुत धन है। अब से तुम केवल मुझसे ही उधार लिया करो।' इसके बाद मैं उसी से उधार लेने लगा।"

वे कहते हैं: "एक दिन मैंने वुज़ू किया और अज़ान देने के लिए खड़ा हुआ। तभी वही मुशरिक कुछ व्यापारियों के साथ वहाँ आया। जब उसने मुझे देखा तो कहने लगा, 'ऐ हबशी!' मैंने कहा, 'जी।' उसने मेरी ओर घृणा से देखा और बहुत कठोर शब्दों में कहा, 'क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे और महीने की तय तारीख़ के बीच कितने दिन बाकी हैं?'

अर्थात उधार लेते समय यह तय हुआ था कि अमुक तारीख़ तक या एक महीने के भीतर पैसा लौटा दिया जाएगा।

हज़रत बिलाल रज़ि. कहते हैं:

"मैंने कहा, 'हाँ, मुझे मालूम है कि वह समय अब बहुत निकट है।'

उसने कहा: 'अब केवल चार दिन बाकी हैं। जिस दिन कर्ज़ लौटाना तय हुआ था, उसमें केवल चार दिन रह गए हैं। यदि तुमने कर्ज़ अदा न किया तो मैं तुम्हें पकड़ लूँगा और फिर तुम्हें उसी हालत में लौटा दूँगा जिसमें पहले थे, यानी फिर से भेड़-बकरियाँ चराओगे।'"

हज़रत बिलाल रज़ि. कहते हैं: "उसकी यह बात सुनकर मेरे दिल में वही बेचैनी पैदा हुई जो ऐसे समय हर इंसान के दिल में होती है। मैं बहुत दुखी हो गया। यहाँ तक कि मैंने इशा की नमाज़ पढ़ी।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर वालों के पास लौट गए। मैंने आपसे मिलने की अनुमति माँगी। आपने अनुमति दे दी।

मैं रात के समय आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और अर्ज़ किया:

"ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों। जिस मुशरिक से मैं उधार लिया करता था, उसने आज मुझसे ऐसी-ऐसी बातें कही हैं। आपके पास भी इतना माल नहीं है कि मेरी ओर से वह कर्ज़ अदा कर सकें। क्योंकि जब आप किसी ज़रूरतमंद को कुछ देने का आदेश देते थे तो मैं आपके लिए उधार लेकर वह चीज़ उपलब्ध कराता था। अब न आपके पास कुछ है और न मेरे पास। वह मुझे अपमानित करने वाला है। इसलिए मुझे अनुमति दीजिए कि मैं उन मुसलमान कबीलों में से किसी एक के पास चला जाऊँ और वहीं रहूँ, जब तक अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना माल न दे दे जिससे मेरा कर्ज़ अदा हो जाए।"

वे कहते हैं: "मैं वहाँ से निकला और अपने घर पहुँचा। मैंने अपनी तलवार, अपनी थैली, अपने जूते और अपनी ढाल अपने सिरहाने रख दी और निश्चय कर लिया कि सुबह होते ही यहाँ से निकल जाऊँगा।"

वे कहते हैं: "सुबह एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और पुकारने लगा, 'ऐ बिलाल! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बुला रहे हैं।'"

मैं यात्रा पर निकलने के बजाय तुरंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। मैंने देखा कि चार ऊँटनियाँ सामान से लदी हुई खड़ी हैं।

मैंने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अब यात्रा पर जाने की अनुमति चाहता हूँ।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"ख़ुश हो जाओ। अल्लाह तआला ने तुम्हारा कर्ज़ चुकाने का प्रबंध कर दिया है।"

फिर आपने फ़रमाया: "क्या तुमने वे चार बैठी हुई ऊँटनियाँ नहीं देखीं?"

मैंने कहा: "जी हाँ, देखी हैं।"

आपने फ़रमाया: "उनकी गर्दनें और उन पर जो कुछ लदा है, सब तुम्हारा है। अर्थात वे ऊँटनियाँ भी तुम्हारी हैं और उन पर रखा हुआ माल भी तुम्हारा है। उन पर कपड़े और अनाज लदा है। यह सब फ़दक के प्रमुख ने मुझे उपहार के रूप में भेजा है। इन्हें ले लो और अपना कर्ज़ अदा कर दो।"

हज़रत बिलाल रज़ि. कहते हैं: "मैंने ऐसा ही किया।"

फिर मैं मस्जिद गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठे हुए थे। मैंने सलाम किया।

आपने पूछा: "जिस परेशानी का तुम्हें सामना था, उसका क्या हुआ?"

मैंने कहा: "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से जो भी भुगतान होना था, अल्लाह तआला ने सब अदा करा दिया है। अब कुछ भी बाकी नहीं रहा।"

आपने पूछा: "क्या कुछ माल अभी भी बचा है?"

मैंने कहा: "जी हाँ।" आपने फ़रमाया:

"देखो, मुझे इस बचे हुए माल से भी राहत दिलाओ। अर्थात इसे भी गरीबों में बाँट दो। जब तक तुम इसे बाँटकर मुझे इससे मुक्त नहीं कर देते, मैं अपने घर नहीं जाऊँगा।"

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इशा की नमाज़ पढ़ी तो मुझे बुलाकर फ़रमाया: "जिस काम की ज़िम्मेदारी तुम्हें दी गई थी, उसका क्या हुआ?"

अर्थात जो माल बचा था और जिसे बाँटने के लिए कहा गया था, उसका क्या हुआ? हज़रत बिलाल रज़ि. ने अर्ज़ किया:

"कोई लेने वाला हमारे पास आया ही नहीं। इसलिए वह माल अभी भी मेरे पास रखा हुआ है।"

उस रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में ही रात बिताई और फ़रमाया: "अच्छा, तब मैं भी घर नहीं जाऊँगा। मैं मस्जिद में ही रहूँगा।"

अगले दिन जब आपने इशा की नमाज़ पढ़ी तो फिर मुझे बुलाया और पूछा:

"जिस काम की ज़िम्मेदारी तुम्हें दी गई थी, उसका क्या हुआ?"

मैंने अर्ज़ किया:

"ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला ने आपको उससे पूरी तरह राहत दे दी है।"

अर्थात वह सारा माल गरीबों में बाँट दिया गया था।

यह सुनकर आपने अल्लाह की महानता बयान की और उसकी प्रशंसा की। आपने ऐसा इसलिए किया कि कहीं आपकी वफ़ात हो जाए और वह माल अभी भी आपके पास रह जाए। हज़रत बिलाल रज़ि. कहते हैं:

"फिर मैं आपके पीछे-पीछे चला, यहाँ तक कि आप अपनी पाक पत्नियों के पास गए। आपने हर एक को सलाम किया। उसके बाद आप उस स्थान पर चले गए जहाँ आपको रात बितानी थी।"

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-ख़राज…, बाब: इमाम द्वारा मुशरिकों के उपहार स्वीकार करने का बयान, हदीस 3055)

हज़रत उम्मे सुनबुलह रज़ि. बयान करती हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक उपहार लेकर उपस्थित हुई। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक पत्नियों ने वह उपहार लेने से इनकार कर दिया और कहा:

"हम उपहार स्वीकार नहीं करतीं।"

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया:

"उम्मे सुनबुलह का उपहार स्वीकार करो, क्योंकि वह हमारे देहात के लोगों में से है और हम उसके शहर वालों में से हैं।"

इसके बाद आपने उनका उपहार स्वीकार किया और उन्हें अमुक-अमुक वादी

प्रदान कर दी।

(असदुल-ग़ाबह, जिल्द 7, पृष्ठ 336, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 1994 ई.)

अर्थात आपने उनका उपहार भी स्वीकार किया और फिर बदले में उन्हें उपहार स्वरूप एक पूरा इलाक़ा दे दिया, जैसा कि पहले भी उल्लेख हो चुका है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम छोटे से उपहार के बदले भी बहुत अधिक इनाम और उपहार दिया करते थे।

हज़रत इब्न उमर रज़ि. बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि. को फ़रमाया कि जहाँ तक उनका घोड़ा दौड़कर पहुँच जाए, उतनी ज़मीन उन्हें जागीर के रूप में दे दी जाए।

अर्थात आपने फ़रमाया:

"अपने घोड़े को दौड़ाओ। जहाँ जाकर वह रुक जाए, वह पूरा इलाक़ा तुम्हारा होगा।"

फ़तहों के बाद बहुत बड़ा इलाक़ा मुसलमानों के अधिकार में आ गया था।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि. ने अपना घोड़ा दौड़ाया। जब घोड़ा एक स्थान पर जाकर रुक गया तो उन्होंने सोचा कि थोड़ा और इलाक़ा मिल जाए। इसलिए उन्होंने अपने हाथ में पकड़ा हुआ कोड़ा आगे फेंक दिया। वह काफ़ी दूर जाकर गिरा।

तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"उन्हें वहाँ तक ज़मीन दे दो जहाँ तक उनका कोड़ा जाकर गिरा है।"

अर्थात जहाँ तक उन्होंने घोड़े पर बैठे-बैठे अपना कोड़ा फेंका था, वहाँ तक की ज़मीन भी उन्हें दे दी जाए।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-ख़राज..., बाब: ज़मीन जागीर में देने का बयान, हदीस 3072)

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक बार वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ यात्रा कर रहे थे। आपके साथ और भी लोग थे। यह घटना उस समय की है जब आप हुनैन से वापस लौट रहे थे।

रास्ते में कुछ बद्दू लोग आपसे लिपट गए और आपसे माँगने लगे। उन्होंने आपको इतना घेर लिया कि आपको एक बबूल के पेड़ की ओर हटना पड़ा। आपकी चादर उस पेड़ की शाखाओं में फँस गई और आप वहीं रुक गए।

कुछ दूसरी रिवायतों में यह भी है कि जब चादर फँस गई तो वे उसे खींचने लगे, जिससे आपकी गर्दन पर भी निशान पड़ गए।

तब आपने फ़रमाया: "मेरी चादर मुझे दे दो।"

फिर आपने फ़रमाया: "यदि मेरे पास इन काँटेदार पेड़ों की संख्या के बराबर भी धन और पशुधन होता, तो मैं निश्चय ही वह सब तुम्हारे बीच बाँट देता। और तुम मुझे कभी कंजूस नहीं पाते, न झूठा और न ही कायर।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुल-जिहाद वस्सियर, बाब: युद्ध में बहादुरी और कायरता, हदीस 2821, जिल्द 5, पृष्ठ 185, नज़ारत इशाअत, रब्वा; अल-लुलुउल-मकनून सीरत एनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 353–352, मकतबा दारुस्सलाम, रियाद)

इस घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मसलह मौऊद रज़ि. ने लिखा है कि मक्का की विजय और ग़ज़वा-ए-हुनैन से फ़ारिग होने के बाद जो धन पराजित दुश्मनों से जुर्माने के रूप में और युद्धभूमि में छोड़ी गई वस्तुओं से इकट्ठा हुआ था, उसे प्रथा के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस्लामी सेना में बाँटना था।

लेकिन इस अवसर पर आपने वह धन मुसलमानों में बाँटने के बजाय मक्का और उसके आसपास के लोगों में बाँट दिया। उन लोगों के दिलों में अभी ईमान पूरी तरह पैदा नहीं हुआ था। उनमें से बहुत से लोग अभी भी काफ़िर थे और जो मुसलमान हो चुके थे, वे भी अभी-अभी मुसलमान बने थे।

उनके लिए यह बिल्कुल नई बात थी कि एक क़ौम अपना धन दूसरे लोगों में बाँट रही है। इस धन के बँटवारे से उनके दिलों में भलाई और तक़वा पैदा होने के बजाय उनका लालच और भी बढ़ गया।

उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चारों ओर से घेर लिया और आपसे और अधिक माँगें करने लगे। यहाँ तक कि धक्का देते-देते आपको एक पेड़ तक ले गए। उनमें से एक व्यक्ति ने आपकी चादर, जो आपके कंधों पर पड़ी हुई थी, पकड़कर इतनी ज़ोर से मरोड़नी शुरू कर दी कि आपका साँस रुकने लगा।

तब आपने फ़रमाया: "ऐ लोगो! यदि मेरे पास और कुछ होता तो मैं वह भी तुम्हें दे देता। तुम मुझे कभी कंजूस या कायर नहीं पाओगे।"

फिर आप अपनी ऊँटनी के पास गए, उसका एक बाल तोड़ा, उसे ऊपर उठाकर लोगों को दिखाया और फ़रमाया:

"ऐ लोगो! तुम्हारे माल में से मुझे इस बाल के बराबर भी कोई आवश्यकता नहीं है, सिवाय उस पाँचवें हिस्से के, जो अरब के कानून के अनुसार सरकार का हिस्सा होता है। और वह पाँचवाँ हिस्सा भी मैं अपने ऊपर खर्च नहीं करता, बल्कि वह भी तुम्हारे ही कामों और लोगों की आवश्यकताओं पर खर्च किया जाता है। और याद रखो, जो व्यक्ति बेईमानी करेगा, वह क़यामत के दिन उसी बेईमानी के कारण अल्लाह के सामने अपमानित होगा।"

यह घटना बयान करने के बाद हज़रत मसलह मौऊद रज़ि. आगे टिप्पणी करते हुए लिखते हैं:

"लोग कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बादशाहत के इच्छुक थे। क्या बादशाहों और जनता का संबंध ऐसा होता है? क्या किसी में इतनी शक्ति होती है कि वह बादशाह को इस प्रकार धक्का देता हुआ ले जाए और उसकी गर्दन में चादर डालकर उसे घोंटने लगे? अल्लाह के रसूलों के अतिरिक्त ऐसा उदाहरण और कौन प्रस्तुत कर सकता है?"

(दीबाचा तफ़्सीरुल-कुरआन, अनवारुल-उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 358–357)

ग़ज़वा-ए-तबूक के दौरान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक बहुत सुंदर घोड़ा मिला, जिसकी आवाज़ आपको बहुत अच्छी लगती थी। फिर एक अंसारी ने आपसे कहा:

"मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों! यह घोड़ा मुझे दे दीजिए।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यह घोड़ा अब तुम्हारा है।"

(शरफ़ुल-मुस्तफ़ा, भाग 3, पृष्ठ 299, जामिअ अबवाब मा काना लिन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिनल-अज़वाज वल-अमताअ, अध्याय: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घोड़ों का वर्णन, हदीस 1040, दारुल-बशाइर अल-इस्लामिय्या, प्रथम संस्करण, 2003 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि जिस बीमारी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई, उसी दौरान आपने फ़रमाया:

"ऐ आयशा! उस सोने का क्या हुआ?" तब वे पाँच, सात, आठ या नौ सोने के सिक्के, जो घर में मौजूद थे, आपकी सेवा में लेकर आईं।

आपने उन सिक्कों को अपने हाथ में उलट-पलट कर देखते हुए फ़रमाया:

"मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह के बारे में क्या गुमान होगा, यदि वह अल्लाह से इस हालत में मिले कि उसके पास यह सोना मौजूद हो? ऐ आयशा! इन्हें खर्च कर दो।"

अर्थात यह सब लोगों में बाँट दो।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 8, पृष्ठ 53, मुस्नद आयशा रज़ि., हदीस 24726, आलमुल-कुतुब, बेरूत, 1998 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"एक बार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर आए और पूछा कि हमारे घर में क्या है? हज़रत आयशा रज़ि. ने दो अशर्फ़ियाँ निकालकर आपके सामने रख दीं और कहा कि बस यही हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी हथेली पर रखा और फ़रमाया:

'उस नबी की क्या हालत होगी जो अपने पीछे दो अशर्फ़ियाँ छोड़ जाए?'

फिर उसी समय आपने वे दोनों अशर्फ़ियाँ लोगों में बाँट दीं।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 281, संस्करण 2022 ई.)

हुनैन के माल-ए-ग़नीमत का विवरण

रिवायतों में वर्णन मिलता है कि हुनैन में माल-ए-ग़नीमत के रूप में छह हज़ार (6000) गुलाम और दासियाँ मिलीं। कुछ रिवायतों में आठ हज़ार (8000) का भी उल्लेख मिलता है। इसके अलावा चौबीस हज़ार (24000) ऊँट, चालीस हज़ार (40000) से अधिक भेड़-बकरियाँ और चार हज़ार (4000) औक़िया चाँदी मिली, जो लगभग 490 किलोग्राम के बराबर होती है। एक औक़िया लगभग साढ़े दस तोले के बराबर होता है।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माल-ए-ग़नीमत का वितरण शुरू किया तो सबसे पहले तालीफ़-ए-क़ल्ब (दिलों को जोड़ने और इस्लाम की ओर आकर्षित करने) का ध्यान रखा। ये अरब के बड़े-बड़े सरदार थे और अपने-अपने क़बीलों में सम्मान और प्रतिष्ठा रखते थे। उन्हें अपने निकट लाने के लिए आपने उन्हें उपहार दिए। किसी को एक सौ ऊँट, किसी को पचास ऊँट दिए। इसके अतिरिक्त चाँदी और गुलाम भी दिए गए।

अबू सुफ़ियान बिन हरब को आपने एक सौ ऊँट दिए।

जब अबू सुफ़ियान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो उन्होंने आपके सामने चाँदी का बड़ा ढेर देखा। वे कहने लगे:

"ऐ अल्लाह के रसूल! अब तो आप क़ुरैश में सबसे अधिक धनवान हो गए हैं।"

यह सुनकर आप मुस्कुरा दिए और उन्हें चालीस औक़िया चाँदी और एक सौ ऊँट प्रदान किए।

अबू सुफ़ियान ने कहा: "मेरे बेटे यज़ीद को भी कुछ दीजिए।"

आपने उसके लिए भी चालीस औक़िया चाँदी और एक सौ ऊँट देने का आदेश

दिया। यह यज़ीद, अबू सुफ़ियान का बेटा था, न कि वह बदनाम यज़ीद जिसके बारे में आम तौर पर कहा जाता है। वह यज़ीद तो अबू सुफ़ियान का पोता, अर्थात हज़रत मुआविया का बेटा था।

फिर अबू सुफ़ियान ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे दूसरे बेटे मुआविया को भी कुछ दीजिए।"

आपने उनके लिए भी चालीस औक़िया चाँदी और एक सौ ऊँट देने का आदेश दिया। इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा:

"मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों। आप बहुत उदार हैं। मैंने आपसे युद्ध किए हैं और आप कितने अच्छे योद्धा हैं। फिर मैंने आपसे सुलह की और आप कितने अच्छे सुलह करने वाले हैं। अल्लाह आपको इसका उत्तम बदला दे।"

(शरह अल्लामा ज़ुरक़ानी, जिल्द 4, पृष्ठ 19–18; सुबुलुल-हुदा वर-रशाद, जिल्द 5, पृष्ठ 396; दाइरह मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 289, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर; ग़ज़वा-ए-हुनैन, बाशमील, पृष्ठ 274–273 एवं 217; फ़रहंग-ए-सीरत, शब्द "औक़िया", पृष्ठ 49)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता और दानशीलता से लाभ पाने वालों में मक्का के एक प्रमुख सरदार सफ़वान बिन उमय्या भी थे।

यही वह सफ़वान थे जिनसे आपने ग़ज़वा-ए-हुनैन के लिए कवच और हथियार उधार लिए थे। वे उस समय भी मुशरिक थे और उसी स्थिति में ग़ज़वा-ए-हुनैन में शामिल हुए थे। लेकिन इसी युद्ध के दौरान उनके दिल में परिवर्तन आने लगा। जब माल-ए-ग़नीमत बाँटने का समय आया तो आपने उन्हें एक सौ ऊँट दिए। जबकि सहीह मुस्लिम की एक रिवायत के अनुसार आपने उन्हें तीन सौ ऊँट प्रदान किए।

एक दूसरी रिवायत में आता है कि उन्हीं दिनों नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऐसी घाटी से गुज़रे जो माल-ए-ग़नीमत के ऊँटों और भेड़-बकरियों से भरी हुई थी।

सफ़वान उस अपार धन को देखकर आश्चर्यचकित होकर देखने लगे। तब आपने फ़रमाया: "ऐ अबू वहब!" यह सफ़वान की कुनियत थी। आपने पूछा:

"क्या इस घाटी ने तुम्हें आश्चर्य में डाल दिया है?" उन्होंने कहा:

"जी हाँ।" आपने फ़रमाया: "यह सारा माल तुम्हारा है। इसे ले लो।"

यह सुनकर सफ़वान के मुँह से तुरंत निकला:

"मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के नबी हैं, क्योंकि इस प्रकार की उदारता केवल एक नबी ही कर सकता है।"

एक दूसरी रिवायत के अनुसार स्वयं सफ़वान बिन उमय्या बयान करते हैं:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे हुनैन के माल-ए-ग़नीमत में से लगातार देते रहे। परिणाम यह हुआ कि पहले आप मुझे सारी सृष्टि में सबसे अधिक नापसंद थे, लेकिन फिर आप मुझे सारी सृष्टि में सबसे अधिक प्रिय हो गए।"

संक्षेप में, आपने अरब के विभिन्न सरदारों को इसी प्रकार उपहार और धन दिया। ऐसे लोगों की संख्या पचास से अधिक बताई जाती है।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल-फ़ज़ाइल, बाब: नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता, हदीस 2313; दाइरह मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 237–236, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर; शरह ज़ुरक़ानी, जिल्द 4, पृष्ठ 21, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या; अल-लुलुउल-मकनून, सीरत एनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 9, पृष्ठ 341, मकतबा दारुस्सलाम, रियाद; सुबुलुल-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 396, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"एक अवसर पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहुत-सी भेड़-बकरियाँ थीं। एक काफ़िर ने कहा कि आपके पास इतनी भेड़-बकरियाँ इकट्ठी हैं कि क़ैसर और किसरा के पास भी इतनी नहीं होंगी। आपने वे सारी की सारी उसे दे दीं। वह उसी समय ईमान ले आया, क्योंकि नबी के सिवा कोई और ऐसी महान उदारता नहीं दिखा सकता।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 425, संस्करण 2022 ई.)

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि. को आदेश दिया कि वे बाकी लोगों को बुलाएँ। फिर माल-ए-ग़नीमत में जो कुछ शेष बचा था, उसे भी सबमें बाँट दिया। प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में चार ऊँट या चालीस भेड़ें आईं।

इस प्रकार आपने उस समय तक का सबसे बड़ा माल-ए-ग़नीमत पूरी तरह लोगों में बाँट दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन का यह पक्ष विशेष रूप से विचार करने योग्य है। विरोधी लोग आपके और आपकी लड़ाइयों के बारे में यह आरोप लगाते हैं कि मुसलमान गरीब थे और धन-दौलत से वंचित थे, इसलिए युद्ध किए गए।

यदि इस आरोप में थोड़ी भी सच्चाई होती, तो हुनैन के माल-ए-ग़नीमत का वितरण बिल्कुल अलग ढंग से होता।

लेकिन यहाँ हम देखते हैं कि माल-ए-ग़नीमत का एक बहुत बड़ा हिस्सा तालीफ़-ए-क़ल्ब के लिए गैर-मुस्लिमों को दिया गया। क़ुरैश के सरदारों को दिया गया। बल्कि कुछ रिवायतों के अनुसार तो पूरा का पूरा माल दूसरे लोगों में बाँट दिया गया।

(शरह ज़ुरक़ानी, जिल्द 4, पृष्ठ 27, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत; ग़ज़वा-ए-हुनैन, बाशमील, पृष्ठ 270; दाइरह मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 9, पृष्ठ 323–322 ,289; सीरतुन्नबी, शिब्ली नोमानी, भाग प्रथम, पृष्ठ 396 तथा भाग चतुर्थ, पृष्ठ 247, मकतबा इस्लामिया, 2012 ई. से उद्धृत)

यद्यपि इसमें और भी कई हित और उद्देश्य रहे होंगे, लेकिन संसार ने यह स्पष्ट रूप से देख लिया कि आपने अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। यहाँ तक कि अपने सबसे निष्ठावान और वफ़ादार साथियों, अर्थात अंसार-ए-मदीना, को भी इस माल-ए-ग़नीमत में से या तो कुछ नहीं दिया या बहुत कम दिया।

ग़ज़वा-ए-हुनैन के दिन एक महिला आई और उसने कुछ शेर पढ़े, जिनमें उसने क़बीला हवाज़िन में आपके दूध पीने (रज़ाअत) के दिनों का उल्लेख किया।

इसके बाद आपने हवाज़िन से लिया हुआ माल वापस कर दिया और उन्हें इतना अधिक दिया कि जो कुछ आपने उन्हें दिया उसकी कीमत पाँच लाख दिरहम के बराबर आँकी गई।

इब्न दिह्या कहते हैं: "यह उदारता की पराकाष्ठा थी। ऐसी उदारता के बारे में कभी सुना नहीं गया।"

(सुबुलुल-हुदा वर-रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 51, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 1993 ई.)

जब हवाज़िन के प्रतिनिधि मुसलमान होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आए और उन्होंने अनुरोध किया कि उनका माल और उनके बंदी उन्हें लौटा दिए जाएँ, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और फ़रमाया:

"मुझे सच्ची बात सबसे अधिक प्रिय है। तुम दो बातों में से एक को चुन लो—या तो अपने बंदी वापस ले लो या अपना माल। मैं तो जिअर्राना में तुम्हारा इंतज़ार करता रहा।"

वास्तव में, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ़ से लौटे तो आपने दस से कुछ अधिक रातें वहीं रुककर उनका इंतज़ार किया कि वे आएँ और अपना माल या बंदियों की माँग करें।

जब उन्हें पूरी तरह समझ आ गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दोनों चीज़ें एक साथ नहीं देंगे, बल्कि दो में से केवल एक ही देंगे, तो उन्होंने कहा:

"हम अपने बंदियों को ही वापस लेना चाहते हैं।"

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुसलमानों के बीच खड़े हुए, अल्लाह की प्रशंसा की और फ़रमाया:

"तुम्हारे ये भाई तौबा करके हमारे पास आए हैं। मैंने उचित समझा है कि उनके बंदी उन्हें लौटा दिए जाएँ। इसलिए तुममें से जो व्यक्ति ख़ुशी से अपना हिस्सा छोड़ना चाहे, वह छोड़ दे। और जो अपने हिस्से पर कायम रहना चाहे, वह भी छोड़ दे। भविष्य में जब अल्लाह हमें कोई और माल-ए-ग़नीमत देगा, तो हम उसे उसका हिस्सा उसमें से दे देंगे।"

लोगों ने कहा:

"ऐ अल्लाह के रसूल! आपकी ख़ातिर हम अपनी ख़ुशी से ये सभी बंदी बिना किसी बदले के वापस करते हैं। हमें किसी हिस्से की आवश्यकता नहीं है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"हमें यह मालूम नहीं कि तुममें से किसने अनुमति दी है और किसने नहीं। इसलिए तुम वापस जाओ और अपने सरदारों के माध्यम से अपना निर्णय हमारे सामने प्रस्तुत करो।"

यहाँ आपने बहुत सावधानी बरती और कहा कि हर क़बीले के सरदार अपनी-अपनी क़ौम की सहमति लेकर आएँ।

लोग वापस गए। उनके सरदारों ने उनसे बात की। फिर वे दोबारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आए और उन्होंने बताया:

"सभी लोगों ने ख़ुशी-ख़ुशी अनुमति दे दी है कि बंदियों को वापस कर दिया जाए।"

इस प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हवाज़िन के सभी बंदियों को बिना किसी मुआवज़े के आज़ाद कर दिया।

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुल-वकालह, बाब: यदि कोई अपने प्रतिनिधि को कोई वस्तु उपहार में दे..., हदीस संख्या 2308–2307, जिल्द 4, पृष्ठ 294–292, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत)

आपने उन्हें केवल आज़ाद ही नहीं किया, बल्कि उन्हें नए कपड़े भी दिए। कपड़े खरीदने के लिए आपने एक सहाबी को विशेष रूप से मक्का भेजा। आपने विशेष रूप से यह हिदायत दी:

"इनमें से कोई भी आज़ाद होने वाला व्यक्ति बिना कपड़ों के न जाए।"

(अस-सीरतुल-हलबिय्या, जिल्द 3, पृष्ठ 181, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. से रिवायत है कि ग़ज़वा-ए-हुनैन के दिन लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और माँगने लगे। आपने उन्हें अपनी भेड़ों, बकरियों और ऊँटों में से इतना माल दिया कि कुछ भी बाकी न रहा।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"तुम क्या चाहते हो? क्या तुम चाहते हो कि मैं कंजूस बन जाऊँ? अल्लाह की क़सम! मैं न कंजूस हूँ, न डरपोक और न ही झूठ बोलने वाला हूँ।"

(सुबुलुल-हुदा वर-रशाद, जिल्द 7, पृष्ठ 53, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 1993 ई.)

इस पहलू से हम यह भी देखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता और दानशीलता कभी भी बिना विवेक के नहीं होती थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि आप माँगने वालों को दिया करते थे और कभी इनकार नहीं करते थे, लेकिन कुछ अवसरों पर आपने बहुत बुद्धिमानी के साथ माँगने वालों को रोक भी दिया। इसके पीछे कई प्रकार की हितकारी बातें होती थीं।

उदाहरण के लिए, एक बार आप लोगों में धन बाँट रहे थे। आप सबको दे रहे थे, लेकिन एक व्यक्ति को आपने कुछ नहीं दिया।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. बयान करते हैं कि वह व्यक्ति मुझे उन सब लोगों से अधिक प्रिय था। मैं चाहता था कि दूसरों की बजाय उसे दिया जाए।

इसलिए मैंने अर्ज़ किया:

"ऐ अल्लाह के रसूल! आपने अमुक व्यक्ति को क्यों छोड़ दिया? अल्लाह की क़सम! मैं तो उसे मोमिन समझता हूँ।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "या मुस्लिम।"

(यानी "उसे मोमिन नहीं, मुसलमान कहो।")

हज़रत सअद रज़ि. कहते हैं कि मैं थोड़ी देर चुप रहा। लेकिन उसके बारे में जो मैं जानता था, उसने मुझे फिर बोलने पर मजबूर कर दिया। मैंने फिर कहा:

"ऐ अल्लाह के रसूल! आपने अमुक व्यक्ति को छोड़ दिया। अल्लाह की क़सम! मैं तो उसे मोमिन ही समझता हूँ।"

आपने फिर वही फ़रमाया:

"या मुस्लिम।" फिर भी मैं अपने विचार के कारण तीसरी बार वही बात दोहराने लगा। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वही उत्तर दिया और उसके बाद फ़रमाया:

"ऐ सअद! मैं एक व्यक्ति को इसलिए देता हूँ कि कहीं अल्लाह तआला उसे आग (जहन्नम) में न गिरा दे, जबकि दूसरा व्यक्ति मुझे उससे अधिक प्रिय होता है।"

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, किताबुल-ईमान, बाब: जब इस्लाम पूर्ण न हो..., हदीस संख्या 27, जिल्द 1, पृष्ठ 69–68)

अर्थात तुम्हारी बात अपनी जगह ठीक है, लेकिन इसके पीछे और भी कई हित और उद्देश्य होते हैं। इसी कारण मैं कुछ लोगों को देता हूँ, ताकि उनका ईमान थोड़ा और मज़बूत हो जाए। कुछ लोग उपहार या दुनिया के किसी लाभ के कारण ही अपने ईमान पर दृढ़ बने रहते हैं, जैसा कि पहले भी अनेक उदाहरण दिए जा चुके हैं।

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन सैयद वलीउल्लाह शाह साहिब रज़ि. इसकी व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि "मोमिन" और "मुस्लिम"—इमाम बुख़ारी ने इस हदीस के माध्यम से ईमान और इस्लाम के बीच का मूल अंतर स्पष्ट किया है।

अर्थात ईमान दिल की अंदरूनी अवस्था का नाम है, जबकि इस्लाम का संबंध बाहरी आचरण से है।

इसी कारण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी कि किसी व्यक्ति के बारे में राय व्यक्त करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। किसी के दिल की वास्तविक स्थिति का ज्ञान केवल अल्लाह तआला को ही है।

जिस सहाबी को उस समय देना उचित नहीं समझा गया, वे हज़रत जुऐल बिन सुराक़ा रज़ि. थे, जो एक सच्चे और निष्ठावान मुहाजिर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं भी उनसे प्रेम करते थे। लेकिन इसके बावजूद, जब हज़रत सअद रज़ि. ने बार-बार आग्रह किया, तब आपने उन्हें यह शिष्टाचार सिखाया और ईमान तथा इस्लाम के बीच के इस अंतर को ध्यान में रखने की शिक्षा दी।

इस घटना से यह भी पता चलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कमज़ोर लोगों का भी पूरा ध्यान रखने की शिक्षा दी, ताकि वे अपनी कमज़ोरी के कारण ठोकर न खाएँ।

जिस प्रकार एक छोटा और कमज़ोर पौधा अधिक देखभाल चाहता है, जबकि एक बड़ा वृक्ष उतनी देखभाल का मोहताज नहीं होता, उसी प्रकार आपने लोगों के ईमान को ठोकर खाने से बचाने के लिए छोटी-से-छोटी बात का भी ध्यान रखा।

इस मामले में कुछ नासमझ लोग बहुत गलत रवैया अपनाते हैं। वे केवल यह नहीं कि ठोकर खाने वाले व्यक्ति को उन बातों से बचाएँ जो उसके लिए ठोकर का कारण बन सकती हैं, बल्कि स्वयं ही उसकी ठोकर का कारण बन जाते हैं। सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने के बजाय वे खुले तौर पर ऐसे कमज़ोर लोगों के ईमान पर हमला कर बैठते हैं।

कुछ लोगों की यही आदत होती है। इस प्रकार वे उन्हें और अधिक धक्का दे देते हैं और उनका कमज़ोर ईमान और पीछे हट जाता है।

इसलिए हमें यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस विषय में इतनी सावधानी बरतते थे कि किसी दूसरे व्यक्ति के सामने किसी के ईमान की विशेष प्रशंसा करने से भी मना करते थे।

केवल इसलिए नहीं कि कभी-कभी सामने प्रशंसा करना उसी व्यक्ति के लिए हानिकारक हो सकता है जिसकी प्रशंसा की जा रही है, बल्कि इसलिए भी कि इस प्रकार की तुलना से कभी-कभी दूसरे व्यक्ति के ईमान और उसके व्यवहार पर भी अप्रत्यक्ष रूप से आघात पहुँचता है।

इस एक घटना में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चार महत्वपूर्ण शिक्षाएँ दीं।

शाह साहिब रज़ि. लिखते हैं कि वे चार शिक्षाएँ ये हैं:

ईमान और इस्लाम के बीच का अंतर — इस्लाम स्वीकार करना और ईमान लाना, दोनों में अंतर है। एक बाहरी बात है और दूसरी दिल की अवस्था।
शब्दों का उचित और सही अवसर पर प्रयोग — किस अवसर पर कौन-सा शब्द प्रयोग करना चाहिए।

मुअल्लफ़तुल-क़ुलूब (तालीफ़-ए-क़ल्ब) का ध्यान रखना — अर्थात लोगों के दिलों को जोड़ने और उनके हित को सामने रखकर व्यवहार करना।
किसी की बिना सोचे-समझे इस प्रकार प्रशंसा न करना कि उससे दूसरों के ईमान या उनके व्यवहार पर चोट पहुँचे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन की प्रत्येक घटना ज्ञान, बुद्धिमत्ता और सुधार का ख़ज़ाना है।

(सहीह अल-बुख़ारी, अनूदित, जिल्द 1, पृष्ठ 70, प्रकाशित: नज़ारत इशाअत से उद्धृत)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के श्रेष्ठ चरित्र का वर्णन करते हुए फ़रमाया:

"आपके सभी नैतिक गुणों में पूर्ण संतुलन पाया जाता था और प्रत्येक गुण अपने उचित समय और उचित स्थान पर ही प्रकट होता था। आपके इन श्रेष्ठ गुणों में आपकी उदारता भी अपने उचित अवसर पर होती थी, आपका त्याग भी अपने उचित अवसर पर होता था और आपकी कृपा तथा दयालुता भी अपने उचित अवसर पर ही प्रकट होती थी।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, भाग तृतीय, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 1, पृष्ठ –194 195 से उद्धृत)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उदारता और दानशीलता की घटनाएँ असंख्य हैं। उन्हीं घटनाओं में हमें आपके श्रेष्ठ चरित्र के अन्य अनेक पहलू भी दिखाई देते हैं।

संक्षेप में, जिस प्रकार आपकी शिक्षा पूरी तरह संतुलित है, उसी प्रकार आपका प्रत्येक कार्य भी उसी संतुलन के अनुरूप था।

अल्लाह तआला हमें भी आपके जीवन के प्रत्येक पहलू पर विचार करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हम आपके आदर्श का अनुसरण करने का प्रयास करते हुए अपनी ज़िंदगी को अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अनुसार चलाने वाले बनें।

* * *

दुआ की दरख़्वास्त

जनाब सुहैल अहमद साहब अपने, अपने वालिदैन एवं समस्त परिवार के लिए जमाअत के सभी अहबाब से दुआ की दरख़्वास्त करते हैं।

अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे, ईमान, सेहत, में बरकत अता फ़रमाए। आमीन।

जनाब सुहैल अहमद साहब

जमाअत: आद्रा | ज़िला: पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम (स.अ.व.) का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा रसूले करीम (स.अ.व.) ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ज़ोर देने के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप का अभिप्राय यह तो नहीं हो सकता था कि शत्रु भाग भी जाए तो भी यहां खड़े रहो। यह कहते हुए उन्होंने दर्रा छोड़ दिया और रणभूमि में कूद पड़े। भागती हुई सेना में से ख़ालिद बिन वलीद जो बाद में इस्लाम के महान सेनापति सिद्ध हुए की दृष्टि ख़ाली दर्रे पर पड़ी जहां केवल कुछ सैनिक अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद ने अपनी (काफ़िरों की) सेना के अन्य सेनापति उमर बिन अलआस को आवाज़ दी और कहा कि पीछे पहाड़ी दर्रे पर तनिक दृष्टि डालो। उमर बिन अलआस ने जब दर्रे पर दृष्टि डाली तो समझा कि मुझे जीवन का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। दोनों सेनापतियों ने अपनी भागती हुई सेना को संभाला और इस्लामी सेना को भारी क्षति पहुँचाते हुए पर्वत पर चढ़ गए, वहां दर्रे की सुरक्षा के लिए थोड़े से मुसलमान खड़े रह गए थे, उनको टुकड़े-टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी सेना पर टूट पड़े। उनके विजय-नाद को सुनकर शत्रु की भागती सेना रणभूमि की ओर लौट पड़ी। यह आक्रमण ऐसा अचानक हुआ तथा काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने बिखर गए कि उन लोगों के मुक़ाबले में कोई समुचित इस्लामी सेना नहीं थी। रणभूमि में अकेला-अकेला सैनिक दिखाई दे रहा था, जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया, शेष इस असमंजस में थे कि यह हो क्या गया है पीछे की ओर दौड़े। कुछ सहाबा दौड़ कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर एकत्र हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी[1]। काफ़िरों ने उस स्थान पर भयंकर आक्रमण किया जहां रसूले करीम (स.अ.व.) खड़े थे। सहाबा एक के बाद एक आप[स.] की रक्षा करते हुए मारे जाने लगे। कृपाणधारियों के अतिरिक्त धनुषधारी ऊँचे टीलों पर खड़े होकर रसूले करीम (स.अ.व.) की ओर अंधाधुंध वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय तल्हा[रज़ि.] ने जो क़ुरैश में से थे तथा मक्का के मुहाजिरों में से थे, यह देखते हुए कि शत्रु सब के सब तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की ओर फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के मुख के आगे खड़ा कर दिया। वाण-वर्षा में जो तीर लक्ष्य पर गिरता था वह 'तल्हा[रज़ि.]' के हाथ पर गिरता था, परन्तु प्राणों की बाज़ी लगाने वाला वफ़ादार सिपाही अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हा[रज़ि.] का हाथ घावों से छलनी हो कर बिल्कुल बेकार हो गया और उनका एक ही हाथ शेष रह गया। वर्षों पश्चात् इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के युग में जब मुसलमानों में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो किसी शत्रु ने व्यंग के तौर पर तल्हा को टुण्डा कहा। इस पर एक अन्य सहाबी ने कहा हाँ टुण्डा ही है परन्तु कैसा मुबारक टुण्डा है। तुम्हें ज्ञात है तल्हा का यह हाथ रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख की रक्षा में टुण्डा हुआ था। उहद के युद्धोपरान्त किसी व्यक्ति ने तल्हा[रज़ि.] से पूछा कि जब वाण हाथ पर लगते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुख से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा[रज़ि.] ने उत्तर दिया दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी परन्तु मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम (स.अ.व.) के मुख पर आ लगे।

परन्तु ये कुछ लोग इतनी विशाल सेना का कब तक मुक़ाबला कर सकते थे क़ाफ़िरों की सेना का एक गिरोह आगे बढ़ा और उस ने रसूले करीम (स.अ.व.) के पास के जवानों को धकेला कर पीछे कर दिया। रसूले करीम (स.अ.व.) वहां अकेले पर्वत की भांति खड़े थे कि बड़े ज़ोर से एक पत्थर आप के ख़ोद (Security Cap लोहे की टोपी) पर लगा ख़ोद की कील आप के सर पर घुस गई और आप बेहोश होकर उन सहाबा[रज़ि.] के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे। तत्पश्चात् कुछ अन्य सहाबा[रज़ि.] आप के शरीर की रक्षा करते हुए शहीद हुए और उनके शव आप के शरीर पर जा गिरे। काफ़िरों ने आप के शरीर को शवों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अतः मक्का की सेना स्वयं को पुनर्गठन के उद्देश्य से पीछे हट गई। जो सहाबा आप के पास खड़े थे और जिन्हें काफ़िरों की सेना का रेला ढकेल कर पीछे ले गया था उनमें हज़रत उमर[रज़ि.] भी थे। जब आप ने देखा कि रणभूमि समस्त लड़ने वालों से साफ हो चुकी है तो आप को विश्वास हो गया कि रसूले करीम (स.अ.व.) शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में एक ही समय में क़ैसर तथा किस्रा का मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया था और उस का हृदय कभी नहीं घबराया और न भयभीत हुआ था। वह एक पत्थर पर बैठकर बच्चों की भांति रोने लग गया, इतने में मालिक[रज़ि.] नामक एक सहाबी जो इस्लामी सेना की विजय के समय पीछे हट गए थे; क्योंकि वह निराहार थे और रात से उन्होंने कुछ नहीं खाया था। जब विजय हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की ओर चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख दूर करें। वह विजय की ख़ुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमर[रज़ि.] तक जा पहुँचे और उमर[रज़ि.] को रोते देख कर हैरान हुए और आश्चर्य से पूछा उमर आप को क्या हुआ? इस्लाम की विजय पर आप को प्रसन्न होना चाहिए या रोना चाहिए? उमर ने उत्तर में कहा मालिक! कदाचित तुम विजय के तुरन्त बाद पीछे हट आए थे, तुम्हें मालूम नहीं कि काफ़िरों की सेना पहाड़ी के पीछे से चक्कर काटकर इस्लामी सेना पर टूट पड़ी और चूंकि मुसलमान अस्त-व्यस्त हो चुके थे, उनका मुकाबला कोई न कर सका। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कुछ सहाबा के साथ उन के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए और मुक़ाबला करते-करते शहीद हो गए। मालिक[रज़ि.] ने कहा उमर यदि यह बात सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं, जिस लोक में हमारा प्यारा गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिए। यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो आप के हाथ में थी जिसे आप मुख में डालने ही वाले थे उसे यह कहते हुए फेंक दिया कि हे खजूर! मालिक और स्वर्ग के मध्य तेरे अतिरिक्त और कौन सी वस्तु रोक है यह कहा और तलवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए। तीन हज़ार सेना के मुकाबले में एक व्यक्ति कर ही क्या सकता था, परन्तु एक ख़ुदा की उपासना करने वाली भावना बहुतों पर भारी होती है। मालिक[रज़ि.] इस निर्भयता से लड़े कि शत्रु स्तब्ध रह गया परन्तु अन्ततः घायल हुए, फिर गिरे तथा गिर कर भी शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करते रहे, जिस के परिणामस्वरूप मक्का के काफ़िरों ने आप पर इतना भयानक आक्रमण किया कि युद्ध के पश्चात् आप के शव के सत्तर टुकड़े मिले, यहां तक कि आप का शव पहचाना नहीं जाता था। अन्त में आप की बहन ने एक उंगली से पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई का शव है।

वे सहाबा[रज़ि.] जो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुनः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुनः एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुनः एकत्र होने लगी। रसूले करीम (स.अ.व.) उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा हम ने मुहम्मद (स.अ.व.) को मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुनः आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुनः शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हम ने अबू बक्र[रज़ि.] को भी मार दिया। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अबू बकर[रज़ि.] को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी हमने उमर[रज़ि.] को भी मार दिया। तब उमर[रज़ि.] जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अतः काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया اُعْلُ هُبَل اُعْلُ هُبَل 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर दिया है। वही रसूले करीम (स.अ.व.) जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबूबकर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर[रज़ि.] की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में द्वैतवाद का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा हे अल्लाह के

रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلُّ (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी। इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया। उहद के युद्ध में स्पष्ट विजय के पश्चात् एक पराजय का रूप देखने को मिला परन्तु यह युद्ध वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सच्चाई का एक महान चमत्कार पूर्ण प्रमाण था। इस युद्ध में रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को पहले सफलता प्राप्त हुई फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार आप के प्रिय चाचा हम्ज़ा[रज़ि.] युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर रसूले करीम (स.अ.व.) की भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आप[स.] भी घायल हुए और बहुत से सहाबा शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसी आत्मीय शुद्धि और ईमान के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ, जिस का उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। इस वफ़ादारी और ईमान के प्रदर्शन की कुछ घटनाएं तो पहले वर्णन हो चुकी हैं एक अन्य घटना भी उल्लेखनीय है जिस से ज्ञात होता है

शेष ..

पृष्ठ 12 का शेष नाविक ने हुज़ूर को उठाकर नाव में बैठाया, जिस पर हुज़ूर ने उसे एक रुपया इनाम दिया।

जब नाव नदी में चल रही थी तो हुज़ूर ने मुझसे मुखातिब होकर फ़रमाया, "मियाँ अब्दुल्लाह! कामिल (पूर्ण) की संगति इस नदी की यात्रा की तरह है, जिसमें पार पहुँचने की भी आशा होती है और डूब जाने का भी डर रहता है।"

मैंने उस समय इस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब फ़तह ख़ान धर्मत्यागी हो गया तो मुझे हज़रत की यह बात याद आई।

ख़ैर, रास्ते में फ़तह ख़ान के गाँव में ठहरते हुए हम दूसरे दिन होशियारपुर पहुँच गए।

वहाँ पहुँचते ही हज़रत साहिब ने तवीला के ऊपर वाले कमरे में निवास किया। इस उद्देश्य से कि हमारे बीच किसी प्रकार का विवाद न हो, आपने हम तीनों के अलग-अलग कार्य निर्धारित कर दिए।

मेरे ज़िम्मे भोजन पकाने का काम लगाया गया। फ़तह ख़ान की ड्यूटी यह लगाई गई कि वह बाज़ार से राशन और अन्य आवश्यक सामान लाया करे। शेख हामिद अली का काम यह निर्धारित हुआ कि घर के ऊपर के हिस्से की देखभाल करे और आने-जाने वालों की मेहमाननवाज़ी करे।

इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हाथ से लिखे हुए इश्तिहारों के माध्यम से यह घोषणा कर दी कि चालीस दिनों तक कोई भी व्यक्ति मुझसे मिलने न आए और न कोई मुझे दावत के लिए बुलाए।

इन चालीस दिनों के बाद मैं यहाँ बीस दिन और ठहरूँगा। उन बीस दिनों में मिलने वाले लोग मिल सकते हैं। जो लोग दावत देना चाहें, वे दावत दे सकते हैं और जो प्रश्नोत्तर करना चाहें, वे प्रश्न-उत्तर कर सकते हैं।

हज़रत साहिब ने हमें भी आदेश दिया कि ड्योढ़ी के अंदर की ज़ंजीर हर समय लगी रहे और घर में भी कोई व्यक्ति मुझे न बुलाए। यदि मैं स्वयं किसी को बुलाऊँ तो वह केवल उतनी ही बात का उत्तर दे, जितनी आवश्यक हो। कोई भी ऊपर बालाख़ाने में मेरे पास न आए।

मेरा भोजन ऊपर पहुँचा दिया जाए, लेकिन यह प्रतीक्षा न की जाए कि मैं भोजन कर लूँ। खाली बर्तन बाद में किसी अन्य समय ले जाया करें।

मैं ऊपर अलग नमाज़ पढ़ूँगा और तुम लोग नीचे नमाज़ पढ़ लिया करो।

जुमा की नमाज़ के बारे में हज़रत साहिब ने फ़रमाया कि ऐसी कोई सुनसान मस्जिद तलाश करो जो शहर के एक किनारे पर हो, जहाँ हम एकांत में नमाज़ अदा कर सकें।

इस प्रकार शहर के बाहर एक बाग़ में एक छोटी-सी वीरान मस्जिद थी। जुमा के दिन हुज़ूर वहाँ जाया करते थे, हमें नमाज़ पढ़ाते थे और ख़ुत्बा भी स्वयं ही देते थे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते थे कि मैं भोजन ऊपर छोड़ने जाया करता था और हुज़ूर से कोई बात नहीं करता था। हाँ, कभी-कभी यदि हुज़ूर स्वयं मुझसे कुछ कहते थे तो मैं उत्तर दे देता था।

एक बार हज़रत साहिब ने मुझसे फ़रमाया, "मियाँ अब्दुल्लाह! इन दिनों मुझ पर अल्लाह तआला की बड़ी-बड़ी कृपा के द्वार खुले हुए हैं और कभी-कभी बहुत देर तक अल्लाह तआला मुझसे बातें करता रहता है। यदि उन बातों को लिखा जाए तो कई पन्ने भर जाएँ।"

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते हैं कि पुत्र मऊद के संबंध में जो इल्हाम हुए थे, वे भी इसी चिल्ले के दौरान हुए थे और चिल्ला पूरा होने के बाद होशियारपुर से ही आपने इस भविष्यवाणी की घोषणा की थी।

(ख़ाकसार निवेदन करता है कि 20 फ़रवरी 1886 ई. का इश्तिहार देख लें।)

जब चालीस दिन पूरे हो गए तो घोषणा के अनुसार आप वहाँ बीस दिन और ठहरे।

इन दिनों बहुत-से लोगों ने आपको दावत दी, कई लोग धार्मिक विचार-विमर्श के लिए आए और बाहर से भी आपके पुराने मिलने वाले लोग मेहमान बनकर आए।

इन्हीं दिनों मुरलीधर के साथ आपका वाद-विवाद हुआ, जो "सुरमा-ए-चश्म-ए-आर्य" में दर्ज है।

जब दो महीने की अवधि पूरी हो गई तो हज़रत साहिब उसी रास्ते से वापस क़ादियान रवाना हुए।

होशियारपुर से लगभग पाँच-छह मील की दूरी पर एक बुज़ुर्ग की क़ब्र है, जहाँ एक छोटा-सा बाग़ लगा हुआ था। वहाँ पहुँचकर हुज़ूर कुछ देर के लिए बहली से उतर आए और फ़रमाया, "यह बहुत अच्छी, छायादार जगह है। यहाँ कुछ देर ठहर जाते हैं।"

इसके बाद हुज़ूर उस क़ब्र की ओर गए। मैं भी पीछे-पीछे साथ हो लिया, जबकि शेख हामिद अली और फ़तह ख़ान बहली के पास ही रहे।

आप मक़बरे पर पहुँचे, उसका दरवाज़ा खोलकर भीतर गए और क़ब्र के सिरहाने खड़े होकर दुआ के लिए हाथ उठाए। कुछ देर तक दुआ करते रहे, फिर वापस आए और मुझसे मुखातिब होकर फ़रमाया—

"जब मैंने दुआ के लिए हाथ उठाए तो जिस बुज़ुर्ग की यह क़ब्र है, वे क़ब्र से निकलकर दो घुटनों के बल मेरे सामने आकर बैठ गए। यदि आप साथ न होते तो मैं उनसे बातें भी कर लेता। उनकी आँखें बड़ी-बड़ी हैं और रंग साँवला है।"

फिर आपने कहा, "देखो, यदि यहाँ कोई मुजाविर (दरगाह का सेवक) है तो उससे इनके बारे में पूछो।"

इस पर हुज़ूर ने मुजाविर से पूछा। उसने कहा, "मैंने इन्हें स्वयं तो नहीं देखा, क्योंकि इनके इंतिकाल को लगभग सौ वर्ष हो चुके हैं। हाँ, अपने पिता या दादा से सुना है कि ये इस क्षेत्र के बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे और इस इलाके में इनका बहुत प्रभाव था।"

हुज़ूर ने पूछा, "इनका हुलिया कैसा था?" वह बोला, "सुना है कि इनका रंग साँवला था और आँखें बड़ी-बड़ी थीं।" इसके बाद हम वहाँ से रवाना होकर क़ादियान पहुँच गए।

ख़ाकसार ने मियाँ अब्दुल्लाह साहिब से पूछा कि इस एकांतवास के दौरान हज़रत साहिब क्या किया करते थे और किस प्रकार इबादत करते थे?

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब ने उत्तर दिया, "यह हमें मालूम नहीं, क्योंकि हुज़ूर ऊपर वाले कमरे में रहते थे और हमें ऊपर जाने की अनुमति नहीं थी। भोजन आदि के लिए जब हम ऊपर जाते थे तो भी अनुमति लेकर ही जाते थे।"

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते थे कि एक दिन जब मैं भोजन रखने ऊपर गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मुझे यह इल्हाम हुआ है—

"بُوْرِكَ مَنْ فِيْهَا وَمَنْ حَوْلَهَا"

और हुज़ूर ने इसकी व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि "مَنْ فِيْهَا" (जो उसके भीतर है) से मेरा अभिप्राय है और "مَنْ حَوْلَهَا" (जो उसके आसपास हैं) से तुम लोग अभिप्रेत हो।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते थे कि मैं तो सारा दिन घर में रहता था और केवल जुमा के दिन ही हुज़ूर के साथ बाहर जाता था। शेख हामिद अली भी अधिकतर घर में ही रहता था, लेकिन फ़तह ख़ान प्रायः सारा दिन बाहर रहता था।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि संभवतः जब यह इल्हाम हुआ, उस समय भी वह बाहर ही रहा होगा।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते थे कि उन दिनों फ़तह ख़ान इतना बड़ा श्रद्धालु था कि हमारे साथ बातचीत करते हुए कहा करता था, "मैं तो हज़रत साहिब को नबी मानता हूँ।"

उसकी यह बात सुनकर मैं पुराने प्रचलित विश्वास के कारण घबरा जाता था।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब ने यह भी बयान किया कि एक बार जब मैं भोजन छोड़ने गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया—

"अल्लाह मुझसे इस प्रकार बात करता है और मुझसे ऐसी बातें करता है कि यदि मैं उनमें से थोड़ी-सी बात भी प्रकट कर दूँ, तो जितने लोग आज श्रद्धालु दिखाई देते हैं, वे सब फिर जाएँगे।"

शेष ..

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -2)

22 अक्टूबर, मंगलवार 2013

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) सुबह 5 बजकर 10 मिनट पर "मस्जिद बैतुल हुदा" तशरीफ़ लाए और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सिडनी से ब्रिस्बेन के लिए रवाना आज के कार्यक्रम के अनुसार सिडनी (Sydney) से ऑस्ट्रेलिया के दूसरे शहर ब्रिस्बेन (Brisbane) के लिए रवाना होना था। सुबह 10 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और सिडनी के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए। 11 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर एयरपोर्ट पर तशरीफ़ लाए।

स्पेशल लाउंज में कुछ देर ठहरने के बाद लगभग 12 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) विमान में सवार हुए। ऑस्ट्रेलियन एयरलाइन Qantas Air की उड़ान QF528 के रवाना होने का समय 12 बजकर 25 मिनट था। रवाना होने से पहले विमान के केबिन से पायलट ने घोषणा की कि विमान में कोई तकनीकी खराबी है, जिसे इंजीनियर ठीक कर रहे हैं, इसलिए कुछ देर बाद विमान रवाना होगा।

दस मिनट बीतने के बाद पायलट ने फिर घोषणा की कि अभी तक खराबी ठीक नहीं हुई है। अब इसे ठीक करने की आख़िरी कोशिश की जा रही है। संभव है कि हमें विमान बदलना पड़े।

फिर लगभग 12 बजकर 45 मिनट पर पायलट ने घोषणा की कि तकनीकी खराबी ठीक नहीं हो सकी, इसलिए अब हम विमान बदल रहे हैं। सभी यात्री विमान से उतर जाएँ और दूसरे विमान में सवार होने के लिए गेट नंबर 2 पर चले जाएँ। पायलट ने यह भी कहा कि यह अच्छी बात हुई कि उड़ान भरने से पहले ही हमें इस तकनीकी खराबी का पता चल गया। यदि यह खराबी उड़ान के दौरान सामने आती, तो हम विमान नहीं बदल सकते थे।

इसलिए इस विमान से उतरकर हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) गेट नंबर 2 के Waiting Area में तशरीफ़ ले गए। वहाँ कुछ देर ठहरने के बाद लगभग 2 बजे दोबारा नए विमान में सवार हुए। Qantas Air की उड़ान QF528 2 बजकर 20 मिनट पर सिडनी एयरपोर्ट से ब्रिस्बेन (Brisbane) के लिए रवाना हुई।

ब्रिस्बेन ऑस्ट्रेलिया के राज्य Queensland का प्रमुख शहर है और पर्यटन की दृष्टि से ऑस्ट्रेलिया का एक प्रसिद्ध शहर है। यहाँ घूमने-फिरने के लिए बहुत सुंदर स्थान और मनमोहक दृश्य हैं। उदाहरण के तौर पर Big Pineapple तथा ब्रिस्बेन के समुद्री क्षेत्र Gold Coast में बहुत से पार्क हैं, जिनमें Theme Park बहुत प्रसिद्ध है।

ब्रिस्बेन का मौसम ऑस्ट्रेलिया के सबसे अच्छे मौसमों में गिना जाता है। यहाँ गर्मियाँ गर्म (Hot Summers) और सर्दियाँ हल्की (Mild Winters) होती हैं तथा पूरे वर्ष धूप खिली रहती है। ब्रिस्बेन को Sun Shine State भी कहा जाता है। इस शहर की आबादी 22 लाख (2.2 मिलियन) है।

लगभग 1 घंटा 25 मिनट की उड़ान के बाद ब्रिस्बेन के स्थानीय समय के अनुसार 2 बजकर 45 मिनट पर विमान ब्रिस्बेन के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। (ब्रिस्बेन का समय सिडनी के समय से एक घंटा पीछे है।)

जैसे ही हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) विमान के दरवाज़े से बाहर तशरीफ़ लाए, तो सदर जमाअत ब्रिस्बेन जनाब अब्दुस्सलाम असलम साहिब, मुबल्लिग़ सिलसिला ब्रिस्बेन जनाब मसऊद अहमद शाहिद साहिब, नेशनल सदर मजलिस अंसारुल्लाह जनाब मुहम्मद अमजद साहिब तथा ज़ईम अंसारुल्लाह ब्रिस्बेन जनाब शफ़क़त अली गौहर साहिब ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और मुसाफ़हा करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

सदर साहिबा लजना ब्रिस्बेन उम्मतुल मतीन साहिबा तथा सेक्रेटरी तरबियत लजना शाहिदा नसरीन साहिबा ने हज़रत बेगम साहिबा (मद्दज़िल्लुहल आली) का स्वागत किया।

ब्रिस्बेन में अहबाबे जमाअत की ओर से हुज़ूर अनवर का भावपूर्ण स्वागत

3 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) वहाँ से जमाअत अहमदिया ब्रिस्बेन (Brisbane) के सेंटर के लिए रवाना हुए और लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद 4 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर जमाअत के मिशन हाउस पहुँचे।

वहाँ जमाअत के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने बड़े प्रेम और उत्साह के साथ अपने प्यारे आका का ज़ोरदार स्वागत किया। अहबाब ने जोशीले नारे लगाए। बच्चों और बच्चियों ने स्वागत में दुआओं से भरी स्वागत-गीत (नज़्में) प्रस्तुत कीं। स्वागत करने वालों में ऑस्ट्रेलिया की कुछ अन्य जमाअतों से आने वाले अहबाब भी शामिल थे।

दो बच्चों ने हुज़ूर अनवर को फूल भेंट किए, जबकि दो बच्चियों ने हज़रत बेगम साहिबा (मद्दज़िल्लुहल आली) को फूल भेंट किए।

हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) ने अपना हाथ उठाकर सबको "अस्सलामु अलैकुम" कहा और मिशन हाउस के रिहायशी भाग में तशरीफ़ ले गए।

5 बजे हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) "मस्जिद मसरूर" में तशरीफ़ लाए और ज़ुहर तथा अस्र की नमाज़ें एक साथ अदा कराईं। नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी भाग में तशरीफ़ ले गए।

ब्रिस्बेन सेंटर का निरीक्षण

7 बजे हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) कुछ समय के लिए अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और लंगरखाना गए। वहाँ निरीक्षण किया, पका हुआ भोजन देखा और कर्मचारियों को निर्देश दिया कि मांस इस प्रकार पकाया जाना चाहिए कि वह पूरी तरह गल जाए और हाथ से आसानी से टूट जाए।

साथ ही यह भी निर्देश दिया कि आपने यह लंगरखाना भले ही अस्थायी रूप से बनाया है, लेकिन इसके अस्थायी उपयोग की अनुमति काउंसिल से पहले ले लेनी चाहिए थी।

इसके बाद हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) ने लाइब्रेरी देखी। यह लाइब्रेरी नई बनी है। अभी यहाँ पुस्तकों को व्यवस्थित रूप से रखा जाना बाकी है।

इसके अतिरिक्त हुज़ूर अनवर ने कुछ नए बने कार्यालयों का भी निरीक्षण किया और निर्माणाधीन नई मस्जिद के आसपास के क्षेत्र का भी दौरा किया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) "मस्जिद मसरूर" में तशरीफ़ लाए और मगरिब तथा ईशा की नमाज़ें एक साथ अदा कराईं। नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी भाग में तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया ब्रिस्बेन का यह स्थानीय सेंटर ब्रिस्बेन शहर के केंद्र से 40 किलोमीटर दूर Beaudesert Shire Council के क्षेत्र Stockleigh में स्थित है।

इस भूमि का कुल क्षेत्रफल 10 एकड़ है, जिसे फ़रवरी 1999 में खरीदा गया था।

जमाअत ने यहाँ 286 वर्ग मीटर का एक हॉल बनाया था, जो नमाज़ों तथा अन्य जमाअती कार्यक्रमों के लिए उपयोग होता रहा। इसके अतिरिक्त मिशन हाउस, गेस्ट हाउस तथा विभिन्न कार्यालय आदि भी बनाए गए थे। एक पक्का कार पार्क भी बनाया गया था।

21–22 अप्रैल 2006 को हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) अपने ऑस्ट्रेलिया के दौरे के दौरान दो दिनों के लिए ब्रिस्बेन तशरीफ़ लाए थे। 22 अप्रैल को हुज़ूर अनवर ने इस परिसर "बैतुल मसरूर" का उद्घाटन किया था तथा उद्घाटन पट्टिका का अनावरण भी किया था।

उस समय हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) ने यह इच्छा व्यक्त की थी कि अब यहाँ नियमित रूप से अपनी मस्जिद बनाई जाए।

इसलिए अब जमाअत अहमदिया ऑस्ट्रेलिया को यहाँ एक बहुत सुंदर और विशाल मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली है। इस मस्जिद की इमारत का क्षेत्रफल 750 वर्ग मीटर है। मीनार की ऊँचाई 10 मीटर तथा गुम्बद का व्यास 6 मीटर है।

मस्जिद के एक ओर पुरुषों का हॉल है और दूसरी ओर महिलाओं का भाग है। दोनों ओर अलग-अलग वुज़ू की जगहें तथा शौचालय बनाए गए हैं।

पुरुषों के भाग की ओर लाइब्रेरी, MTA Room तथा Studio Room भी बनाए गए हैं। महिलाओं की ओर एक अलग हॉलनुमा कमरा Nursing Room के रूप में बनाया गया है।

जमाअत के इस सेंटर और मस्जिद के दोनों ओर सड़क है और इस मार्ग से आने-जाने वाले लोगों को यह मस्जिद स्पष्ट दिखाई देती है।

इंशाअल्लाह तआला, इस मस्जिद का उद्घाटन हुज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़) 25 अक्टूबर 2013, शुक्रवार (जुमुआ मुबारक) को करेंगे।

शेष ..

★ ★ ★

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 06 August 2026 Issue No. 32

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +9--1-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{82}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम शुरू में ग़रारे (चौड़ी पायंची वाली पायजामा) इस्तेमाल किया करते थे, फिर मैंने कहकर उन्हें छुड़वा दिया। इसके बाद आप साधारण पायजामे पहनने लगे। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि ग़रारा बहुत खुले पायंचे (टखने) वाले पायजामे को कहते हैं (पहले इसका हिंदुस्तान में बहुत रिवाज था, अब बहुत कम हो गया है)।

{83}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आम तौर पर सफ़ेद मुलमल की पगड़ी इस्तेमाल करते थे, जो आमतौर पर दस गज़ लंबी होती थी। पगड़ी के नीचे कुलाह (टोपी) की जगह नरम क़िस्म की रोमी टोपी इस्तेमाल करते थे। और घर में कभी-कभी पगड़ी उतारकर सिर पर सिर्फ़ टोपी ही रहने देते थे। शरीर पर गर्मियों में आमतौर पर मुलमल का कुरता इस्तेमाल करते थे। इसके ऊपर गर्म सदरी (बनियान) और गर्म कोट पहनते थे। पायजामा भी आपका गर्म होता था। इसके अलावा आप आमतौर पर जुराब (मोज़े) भी पहने रहते थे, बल्कि सर्दियों में दो-दो जोड़े ऊपर-नीचे पहन लेते थे। पैरों में आप हमेशा देसी जूता पहनते थे।

इसके अलावा हज़रत वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि जब से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दौरे (मिर्गी के झटके) पड़ने शुरू हुए, उसी समय से आपने गर्मी-सर्दी में गर्म कपड़े का इस्तेमाल शुरू कर दिया था। इन कपड़ों में आपको गर्मी भी लगती थी और कभी-कभी तकलीफ़ भी होती थी, मगर जब एक बार शुरू कर दिया तो फिर आख़िर तक यही इस्तेमाल करते रहे। और जब से शेख रहमतुल्लाह साहिब गुजराती (फिर लाहौरी) अहमदी हुए, वो आपके लिए कपड़ों के जोड़े बनवाकर बाक़ायदा लाते थे और हज़रत साहिब की आदत थी कि जैसा कपड़ा कोई ले आए, पहन लेते थे। एक बार कोई शख़्स आपके लिए 'गर गाबी' ले आया। आपने पहन लिया, मगर उसके उल्टे-सीधे पैरों का आपको पता नहीं चलता था, कई बार उल्टा पहन लेते थे और फिर तकलीफ़ होती थी। कभी-कभी आपका उल्टा पैर पड़ जाता तो तंग आकर फ़रमाते कि 'इनकी कोई चीज़ भी अच्छी नहीं है'। वालिदा साहिबा ने फ़रमाया कि मैंने आपकी सुविधा के लिए उल्टे-सीधे पैर की पहचान के लिए निशान लगा दिए थे, मगर इसके बावजूद आप उल्टा-सीधा पहन लेते थे, इसलिए आपने उसे उतार दिया। वालिदा साहिबा ने फ़रमाया कि हज़रत साहिब ने कभी-कभी अंग्रेज़ी तरह की क़मीस के कफ़ (आस्तीन की मोहरी) के बारे में भी इसी तरह के नापसंदीदगी के शब्द फ़रमाए थे। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि शेख साहिब मौसूफ़ आपके लिए अंग्रेज़ी तरह की गर्म क़मीस बनवाकर लाया करते थे। आप उन्हें इस्तेमाल तो करते थे, मगर अंग्रेज़ी तरह के कफ़ को पसंद नहीं करते थे, क्योंकि पहले तो कफ़ के बटन लगाने से आप घबराते थे, दूसरे बटनों के खोलने और बंद करने का लिहाज़ आपके लिए मुश्किल था। कभी-कभी फ़रमाते थे कि 'ये क्या कान से लटके रहते हैं?' ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि लिबास के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आम उसूल यह था कि जिस क़िस्म का कपड़ा मिल जाता, पहन लेते थे। मगर आमतौर पर अंग्रेज़ी तरीक़े के लिबास को पसंद नहीं करते थे, क्योंकि पहले तो उसे अपने लिए सादगी के ख़िलाफ़ समझते थे, दूसरे आप ऐसे लिबास से जो अंगों को जकड़ा हुआ रखे, बहुत घबराते थे। घर में आपके लिए सिर्फ़ मुलमल के कुरते और पगड़ियाँ तैयार होती थीं। बाक़ी सारे कपड़े आमतौर पर हदिया (उपहार) के तौर पर आपको आ जाते थे। शेख रहमतुल्लाह साहिब लाहौरी इस सेवा में ख़ास इम्तियाज़ (विशिष्टता) रखते थे। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कभी-कभी कमर पर पटका (कमरबंद) भी इस्तेमाल करते थे और जब कभी घर से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे तो कोट ज़रूर पहनकर आते थे। और हाथ में 'अस्सा' (छड़ी) रखना भी आपकी सुन्नत है। वालिदा साहिबा बयान करती हैं कि मैं हज़रत साहिब के लिए हर साल आधे थान के कुरते तैयार किया करती थी, लेकिन जिस साल आपकी वफ़ात हुई, मैंने पूरे थान के कुरते तैयार किए। हज़रत साहिब ने मुझसे कहा भी कि 'इतने कुरते क्या करने हैं'? मगर मैंने तैयार कर लिए, उनमें से अब तक बहुत से कुरते बिना पहने मेरे पास रखे हैं।

{84}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जुमे के दिन ख़ुशबू लगाते और कपड़े बदलते थे।

{85}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब कभी मग़रिब की नमाज़ घर में पढ़ते थे, तो अक्सर सूरह यूसुफ़ की वह आयतें पढ़ते थे, जिसमें ये अलफ़ाज़ आते हैं: 'इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाह' (यूसुफ़: 87)। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ में बहुत सोज़ (तड़प) और दर्द था और आपकी क़िरात (पढ़ने का अंदाज़) लहरदार होती थी।

{86}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हज़रत वालिदा साहिबा ने मुझसे बयान किया कि मैंने कभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एतिकाफ़ बैठते नहीं देखा। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनोरी ने भी मुझसे यही बयान किया है।

{87}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

सैयद फ़ज़ल शाह साहिब ने हमसे बयान किया कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यहाँ मस्जिद मुबारक में तशरीफ़ रखते थे। मैं पास बैठा था। भाई अब्दुल्लाह साहिब सनोरी भी पास थे और कुछ और लोग भी बैठे हुए थे। हज़रत साहिब सब के साथ बातचीत करते थे, मगर जब भाई अब्दुल्लाह साहिब बोलते थे, तो हज़रत साहिब दूसरों की तरफ़ से ध्यान हटाकर उनकी तरफ़ ध्यान कर लेते थे। मुझे इसका मलाल (दुख) हुआ और मैंने उन पर रश्क (ईर्ष्या) किया। हज़रत साहिब मेरे इस ख़याल को समझ गए और मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाने लगे: 'शाह साहिब, आप जानते हैं ये कौन हैं?' मैंने अर्ज़ किया: 'हाँ हज़रत, मैं भाई अब्दुल्लाह साहिब को जानता हूँ।' आपने फ़रमाया: 'हमारा ये मज़हब है कि "क़दीमाँ ख़ुद रा ब-अफ़ज़ाए-ए-क़द्र" (अर्थात बुज़ुर्गों की ख़ुद क़द्र बढ़ानी चाहिए/इनकी इज़्ज़त करनी चाहिए)। ये आपसे भी क़दीम (वरिष्ठ) हैं।' सैयद फ़ज़ल शाह साहिब कहते थे कि इस दिन से मैंने समझ लिया कि हमारा इनसे मुक़ाबला (बराबरी) नहीं, ये हमसे आगे हैं। ख़ाकसार अर्ज़ करता है कि जिस वक़्त सैयद फ़ज़ल शाह साहिब ने ये रिवायत बयान की, उस वक़्त मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनोरी भी पास बैठे थे और मैंने देखा कि उनकी आँखें नम थीं।

{88}बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने मुझसे बयान किया कि हज़रत साहिब ने 1884 ई. में यह इरादा किया था कि क़ादियान से बाहर जाकर कहीं चिल्ला (एकांत साधना) करेंगे और साथ ही हिंदुस्तान की यात्रा भी करेंगे। इसलिए आपने निश्चय किया कि ज़िला गुरदासपुर के सुजानपुर जाकर एकांत में रहेंगे। इस संबंध में हुज़ूर ने अपने हाथ से लिखा हुआ एक पोस्टकार्ड भी मुझे भेजा।

मैंने निवेदन किया कि इस यात्रा और हिंदुस्तान के सफ़र में मुझे भी अपने साथ रखें। हुज़ूर ने यह स्वीकार कर लिया। लेकिन बाद में सुजानपुर की यात्रा के संबंध में हुज़ूर को यह इल्हाम (ईश्वरीय संदेश) हुआ कि "तुम्हारी गुत्थियों का समाधान होशियारपुर में होगा।" इसलिए आपने सुजानपुर जाने का इरादा छोड़ दिया और होशियारपुर जाने का निश्चय कर लिया।

जब जनवरी 1886 ई. में आप होशियारपुर जाने लगे तो आपने मुझे पत्र लिखकर क़ादियान बुला लिया और होशियारपुर के प्रमुख शेख मेहर अली को भी पत्र लिखा कि मैं दो महीने के लिए होशियारपुर आना चाहता हूँ। कृपया ऐसे मकान का प्रबंध कर दें जो शहर के एक किनारे पर हो और उसमें ऊपर का कमरा (बालाख़ाना) भी हो।

शेख मेहर अली ने अपना एक मकान, जो "तवीला" के नाम से प्रसिद्ध था, खाली करवा दिया। हुज़ूर बहली (बैलगाड़ी) में बैठकर दरिया ब्यास के रास्ते रवाना हुए। मैं, शेख हामिद अली और फ़तह ख़ान भी साथ थे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि फ़तह ख़ान, ज़िला होशियारपुर के टांडा के पास स्थित रसूलपुर का रहने वाला था और हुज़ूर का बहुत बड़ा श्रद्धालु था, लेकिन बाद में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के प्रभाव में आकर धर्मत्यागी (मुर्तद) हो गया।

जब हुज़ूर नदी के किनारे पहुँचे तो नाव तक पहुँचने के रास्ते में कुछ पानी था। इसलिए

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad